हरिभूमि

भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार, 6 जुलाई, 2025

11 सामाजिक कार्यकर्ता ने साइकिल से घर-घर ...

12 मिताथल गांव के ललित ने वर्ल्ड पुलिस गेम्स में जीता...

डॉ. पंकज
MBBS, MD (Pathology)
3+ वर्षों का अनुभव

MK हॉस्पिटल भिवानी
डॉ. पंकज का हार्दिक स्वागत करता है।
डॉ. पंकज MK हॉस्पिटल में पैथोलॉजी एवं लैबोरेटरी मेडिसिन विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं देंगे।
पूर्व अनुभव :- Sarojini Naidu Medical College, Agra | Pankaj Scanning and Pathology Research Centre, Agra

आयुष्मान पैनल पर फ्री इलाज उपलब्ध*
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध
NABH मान्यता प्राप्त अस्पताल

एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

खबर संक्षेप

राम नगर कॉलोनी में मेडिकल शिविर आज

भिवानी। जीएमसी सनराइज अस्पताल द्वारा 6 जुलाई को 10 से 2 बजे तक यहां राम नगर कालोनी स्थित मंदिर में निःशुल्क मेडिकल शिविर का आयोजन किया जाएगा। अस्पताल संचालक डा. एमएल शर्मा ने बताया कि इस मेडिकल शिविर में चिकित्सकों द्वारा मरीजों की जांच कर उन्हें निःशुल्क दवाइयां वितरित की जाएंगी। डा. एमएल शर्मा ने बताया कि गिरीराज जागृति मिशन द्वारा वे समय-समय पर शहर में चिकित्सा शिविरों, पौधरोपण कार्यक्रम व अन्य धार्मिक गतिविधियों का आयोजन करते रहते हैं।

साईं धाम हलुवास में भजन संध्या 10 को

भिवानी। साईं बाबा धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा आगामी 10 जुलाई को साईं धाम हलुवास में भजन संध्या व बाद में भंडारे का आयोजन किया जायेगा। साईं बाबा धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रधान संजय कामरा ने बताया की गुरु पूर्णिमा के अवसर पर यह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में भजन गायक अनिल जुनेजा छोटी काशी से व चांग के मनोज कुमार शिरकत करेंगे। उन्होंने बताया की इस कार्यक्रम की शुरुवात सुबह 5 बजे मंगल स्नान सें होगी। हवन यज्ञ 8 बजे होगा। शाम 5 बजे से शाम 8 बजे तक भजन संध्या आयोजित होगी उसके बाद भंडारे का आयोजन होगा।

बिगड़ी पानी की सप्लाई की चाल घरों में पानी की व्यवस्था बदहाल

कहीं पर पीला तो कहीं पर पहुंच रही है दूषित सप्लाई, पनप रही हैं बीमारियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पब्लिक हेल्थ लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाए जाने के कितने भी दावे करें,लेकिन सभी गौण साबित हो रहे है। जून माह में पीने के पानी की ऐसी चाल बिगड़ी की अभी तक पटरी पर नहीं लौट पाई है। हालात ये बने है कि उसके बाद पानी की सप्लाई तो नियमित पहुंचने लगी है,लेकिन किसी इलाके में पीला पानी पहुंच रहा तो किसी में सीवरेज का मिक्स पानी पहुंचने से लोग बेहद परेशान है। मजबूरन लोगों को सप्लाई का पानी ही पीना पड़ रहा है। ऐसे में दूषित पानी से पेट की अनेक बीमारी पनपने लगी है। कई इलाके तो ऐसे है,जहां पर जितने वक्त पानी की सप्लाई पहुंचती है। उतने समय तक पानी को नालियों में ही बहाना पड़ रहा है।

उल्लेखनीय है कि जून माह में पीने के पानी का स्टॉक पूरी तरह से खतम हो गया था। उसके बाद कई इलाकों में तीन तो कहीं पर चार दिनों में एक बार ट्यूबवैलों से पीने के पानी की सप्लाई की जाती थी। बाद में नहरी पानी पहुंचा तो पब्लिक हेल्थ विभाग के जलघरों में पानी पहुंचा। पानी का स्टॉक पूरा होने के बाद ही शहर की पीने के पानी की सप्लाई नियमित हुई। पानी की सप्लाई तो नियमित हो गई,लेकिन स्वच्छ पानी की सप्लाई पटरी से उतर गई। अब अधिकांश इलाके ऐसे है। जहां पर पहले स्वच्छ पानी की सप्लाई पहुंचती थी,पर अब दूषित पानी की सप्लाई पहुंच रही है। अम्बेडकर कॉलोनी में अब पिछले 15 दिनों से पीले पानी की सप्लाई पहुंच रही है।जो कि न तो पीने के लायक है और न ही अन्य किसी कार्य में प्रयोग किया जा सकता। उक्त इलाके के लोग दो सप्ताह से हैंडपैम्प से पानी लाकर अपने हलक को तर कर रहे है। यही स्थिति अंदरूनी शहर के लोगों की बनी है। वहां पर भी सप्लाई का पानी दूषित पहुंच रहा है। कभी पीले पानी की सप्लाई तो कभी सीवर मिक्स पानी पहुंचने से लोगों के लिए नई समस्या खड़ी हो गई है। वे सप्लाई के पानी का किसी भी चीज में प्रयोग नहीं कर पा रहे है।

दूषित पानी पीने से बढ़ने लगी है पेट की बीमारी

दो सप्ताह से दूषित पानी की सप्लाई पहुंचने की वजह से लोगों को मजबूरन वहीं पानी पीना पड़ रहा है। इस पानी के पीने से अनेक लोगों को दस्त व उल्टियां आदि आने की शिकायत बढने लगी है। लोगों ने बताया कि इस बारे में जब संबंधित विभाग के कनिष्ठ अभियंता से सम्पर्क किया जाता है तो वे फोन नहीं उठाते। वे किस अधिकारी के पास शिकायत करें। फिलहाल उनके समक्ष दोहरी समस्या आन पड़ी है।

भिवानी। मध्यप्रदेश में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय मास्टर ट्रेनर और सीबीएसई रिसोर्स पर्सन राजन शर्मा को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

राजन शर्मा को मध्य प्रदेश में मिला 'राष्ट्रदीप शिक्षक प्रेरणा सम्मान'

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- राजन शर्मा देश-विदेश के 40,000 से अधिक शिक्षकों दे चुके हैं को प्रशिक्षण

शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए भिवानी के राष्ट्रीय मास्टर ट्रेनर और सीबीएसई रिसोर्स पर्सन राजन शर्मा को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 'राष्ट्रदीप शिक्षक प्रेरणा सम्मान' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें उनके अभूतपूर्व कार्य, शिक्षकों के प्रशिक्षण में राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय भूमिका और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान के लिए मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ में जिला कलेक्टर, राजगढ़ श्री गिरीश कुमार मिश्रा एवं उप मंडल अधिकारी, नरसिंहगढ़ सुशील कुमार द्वारा प्रदान किया गया।

इस अवसर पर नरसिंहगढ़ विधायक मोहन शर्मा सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे । राजन शर्मा ने नरसिंहगढ़ में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान राजकीय विद्यालयों के 400 प्राचार्यों एवं अध्यापकों को भी प्रशिक्षित किया ।

राजन शर्मा अब तक देश-विदेश के 40,000 से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दे चुके हैं। अपने विनम्र स्वभाव, स्पष्ट दृष्टिकोण और विषय पर गहरी पकड़ के कारण राजन शर्मा को शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों के बीच विशेष सम्मान प्राप्त है। वे एक वरिष्ठ शिक्षाविद , राष्ट्रीय शिक्षा नीति विषेशज्ञ एक्सपर्ट, और समर्पित अभिभावक कोच भी हैं। उनकी कार्यशालाएं सिर्फ जानकारी नहीं देतीं, बल्कि प्रतिभागियों में नवाचार, दृष्टिकोण और नेतृत्व का बीजारोपण करती हैं।

सार्वजनिक शौचालय पर लटका ताला दुकानदार और राहगीर परेशान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढड़ा

- बाढड़ा में प्रतिदिन पांच हजार लोग करते हैं आवागमन

कस्बे के मुख्य चौक पर बने एकमात्र सार्वजनिक शौचालय पर बीते दो महीनों से ताला लटका हुआ है, जिससे आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कस्बे में प्रतिदिन लगभग पांच हजार लोग आवागमन करते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में दुकानदार,राहगीर, महिलाएं व बुजुर्ग शामिल हैं। शौचालय बंद होने से खासतौर पर महिलाएं, बच्चे व बुजुर्गों को काफी दिक्कत हो रही है। दुकानदारों ने प्रशासन से मांग की है कि जल्द ही शौचालय को सुचारू किया जाए ताकि लोगो को कोई परेशानी ना हो ।

दुकानदार जगदीश, छोटूराम, रमेश कुमार, शम्मी कपुर, अजीत, सोहनलाल, अनिल आदि ने बताया कि कई बार राहगीर व ग्राहक उनसे शौच की व्यवस्था के बारे में पूछते हैं, लेकिन सुविधा न होने के कारण उन्हें निराश लौटना पड़ता है। लोगों का कहना है कि व्यापार मंडल द्वारा बनाए गए इस शौचालय की नियमित देखरेख नहीं की जा रही। न तो किसी कर्मचारी की नियुक्ति हुई है और न ही साफ-सफाई की कोई व्यवस्था दिखाई देती है। दुकानदारों का कहना है कि शौचालय का रख रखाव नहीं होने के कारण पानी की नलकी टूटी हुई है कुई की सफाई नहीं होने से बार बार भर जाती है । लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि शौचालय को खोला जाए और इसकी नियमित सफाई व देखरेख की व्यवस्था की जाए ताकि राहगीरों और दुकानदारों को राहत मिल सके।

सड़क पर हमारी गलती किसी की जान ले सकती है या जीवनभर का दुख दे सकती है : सीजेएम

भिवानी। यातायात के नियमों की जानकारी देते हुए।

भिवानी। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला के सदस्य सचिव के निर्देशानुसार तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीश व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिवानी के चेयरमैन डी.आर. चालिया एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी-सह-सचिव पवन कुमार के मार्गदर्शन में शहर में सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों को लेकर विशेष अभियान चलाया गया। अभियान का उद्देश्य वाहन चालकों को उनके कानूनी अधिकारों एवं दायित्वों के प्रति जागरूक करना तथा सड़क पर सुरक्षित व्यवहार को बढ़ावा देना रहा। इस अभियान के तहत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिवानी व जिला यातायात पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा शहर के मुख्य मार्गों पर वाहन चालकों को रोका गया और उन्हें सड़क नियम, जीवन उपकरण/" विषय पर कानूनी जानकारी दी गई। अभियान में पैनल अधिवक्ता बलजीत पुनिया, अधिवक्ता अनुराधा खनगवाल, अधिकार मित्र विरेन्द्र सिंह, जिला यातायात पुलिस अधिकारी सीता राम सहित यातायात पुलिस और आरएसओ के सदस्य सक्रिय रूप से शामिल रहे। टीम ने ट्रैफिक लाइट्स, सीट बेल्ट, हेलमेट, ओवर स्पीडिंग, मोबाइल के प्रयोग जैसी सामान्य लेकिन अत्यंत आवश्यक सावधानियों पर जोर दिया। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव पवन कुमार ने इस अवसर पर कहा कि /"सड़क पर हमारी एक गलती किसी की जान ले सकती है या जीवनभर का दुख दे सकती है। ऐसे में यातायात नियमों का पालन न केवल एक कानूनी जिम्मेदारी है बल्कि नैतिक दायित्व भी है।

अंग्रेजी के पेपर में नकल करते दो पकड़े

भिवानी। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा आज सैकेण्डरी (शैक्षिक) की अंग्रेजी विषय की परीक्षा नकल रहित संचालित करवाई गई, प्रदेशभर में अनुचित साधन प्रयोग के कुल 02 मामले दर्ज किए गए। बोर्ड अध्यक्ष प्रो.(डॉ.) पवन कुमार ने बताया कि उनके उडऩदस्ते द्वारा जिला-नूँह के विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया, जहां परीक्षा नकल रहित व सुव्यवस्थित संचालित हो रही थी। बोर्ड उपाध्यक्ष सतीश कुमार के उडऩदस्ते द्वारा जिला-कैथल व जीन्द के परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया, जहां जिला जीन्द के परीक्षा केन्द्र जाट सी.सै. स्कूल, जीन्द-11 (बी-1) में अनुचित साधन प्रयोग का 01 मामला दर्ज किया। बोर्ड सचिव डॉ. मुनीश नागपाल के उडऩदस्ते द्वारा जिला-रोहतक के परीक्षा केन्द्र वैश्य व.मा.वि., रोहतक-24 का निरीक्षण किया गया। अनुचित साधन प्रयोग का 01 मामला दर्ज किया गया।

ट्रेन की चपेट में आने से महिला की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| लोहारू

- मानसिक रूप से अस्वस्थ बताई जा रही है मृतक महिला
- मृतक संतोष के पुत्र का पिछले दिनों हो गया था एक्सीडेंट

रेलवे स्टेशन के नजदीक रेलगाड़ी की चपेट में आने से अधेड़ उम्र की महिला की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक महिला की पहचान गांव दमकोरा निवासी संतोष के रूप में हुई है। मृतक मानसिक रूप से अस्वस्थ बताई जा रही है। जीआरपी ने मृतका के शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के हवाले कर दिया।

जीआरपी चौकी इंचार्ज राजकुमार ने बताया कि रेलवे कर्मचारी सुबह ट्रेकिंग पर और पटरियों की जांच कर रहा था। इस दौरान श्मशान के नजदीक लोहारू जयपुर रेलवे ट्रैक पर एक महिला का लहुलुहान अवस्था में शव पड़ा था। रेलवे कर्मचारी ने इसकी सूचना स्टेशन मास्टर को दी तथा स्टेशन मास्टर की सूचना के बाद राजकीय रेलवे पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर गई। चौकी इंचार्ज राजकुमार ने बताया कि महिला शव पोस्टमार्टम के लिए लोहारू के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया। महिला की पहचान दमकोरा निवासी करीब 64 वर्षीय संतोष के रूप में हुई। मृतका के देवर के अनुसार मृतक महिला संतोष के पुत्र का पिछले दिनों एक्सीडेंट हो गया था, जिसके बाद संतोष मानसिक रूप से अस्वस्थ थी। बहरहाल मृतका के शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के हवाले कर दिया हैं।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NATIONAL BOARD OF ACCREDITATION · ACCREDITED BY
B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED #19 In North India
RANKED #39 Pvt. Institutes in India
RANKED #41 Across India
RANKED #62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
GSAT 2025 MCQ based
GITAM SCHOLARSHIP -cum- ADMISSION TEST
13/07/2025 | 10:30 am Onwards
Free Registration at www.gangainstitute.com
Venue: GITAM, JHAJJAR (DELHI-NCR)
ADMISSIONS OPEN 2025-26
B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DATA SC.), CSE (AI & ML)
ECE, MECHANICAL, ELECTRICAL, CIVIL
FIRE TECHNOLOGY AND SAFETY
FOR WORKING PROFESSIONALS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY, CSE), M.TECH (CSE), MBA
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA | B.ARCH | M.ARCH | B.ED | M.ED
For Admission Enquiry
8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
◆ GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
◆ GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi +91-9654292902, 03, 04

जलभराव से निपटने के पुख्ता प्रबंधः सांगवान

कुछ ही घंटों में हो जाएगी निकासी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

मानसून सीजन के दौरान जलभराव से होने वाली परेशानियों से निपटने के लिए विधायक सुनील सांगवान ने शहर का निरीक्षण किया और जलभराव क्षेत्रों में बरसाती पानी की निकासी के पुख्ता प्रबंध करने के अधिकारियों को निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान विधायक सांगवान ने कहा कि मानूसन सीजन के दौरान होने वाली बारिश का पानी दो से तीन घंटे में निकाल दिया जाएगा, इसके लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने कहा कि धरातल पर काम हो रहा है और कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

विधायक सांगवान शुक्रवार को पुराना बस स्टैंड स्थित पानी निकासी के प्रबंधों का जायजा लेने पहुंचे। इस दौरान मौजूद दुकानदारों ने विधायक के समक्ष बारिश में जलभराव की समस्या के बारे में अवगत करवाया और खाड़ी से पानी निकासी के लिए मोटरें लगातार चलवाने की मांग उठाई। विधायक ने तुरंत मौके पर मौजूद अधिकारियों को अलग से मोटर व उपकरण लगातार पानी निकासी के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बारिश के बाद पानी निकासी के लिए संबंधित विभाग अपनी पूरी तैयारी रखें, ताकि बारिश बंद होने के दो से तीन घंटे के दौरान पानी निकाला जा सके। वहीं निर्देश भी दिए कि बारिश के पानी की निकासी कम समय में होनी चाहिए। इस बार दादरी शहर में जलभराव से निपटने के लिए व्यापक व पुख्ता प्रबंध किए गए हैं। अब तक हुई बारिश से शहर के अधिकांश क्षेत्रों में जलभराव का समाधान शीघ्र किया गया है। वहीं दुकानदारों ने विधायक सांगवान का धन्यवाद किया कि पहले जहां एक माह तक जलभराव के करण दुकानों में पानी भरने से काफी समस्याएं झेलनी पड़ी थी।

भिवानी। पानी निकासी की व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते विधायक सुनील सांगवान।

वहीं इस बार बारिश के पानी की निकासी के प्रबंध बेहतर हैं और उम्मीद है कि उनकी समस्या का स्थायी समाधान हो जाएगा। विधायक ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जलभराव से निपटने का स्थायी समाधान करें। इस मौके पर सतपाल जुनेजा, सुभाष डावरा, राजल सैनी, रामौतार सैनी, मुकेश सेठ, पवन गर्ग व महीपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

पातवान में दादा भोमिया मंदिर के पास बनेगा शेड, पार्षद ने रखी नींव

बहल। जिला परिषद वार्ड नंबर 18 से जिला पार्षद रविंद्र मंढ़ोली द्वारा अपने क्षेत्र में विकास कार्यों की निरंतर श्रृंखला जारी है। इसी क्रम में शनिवार को गांव पातवान में दादा भोमिया मंदिर के सामने वाले चौक में बड़े शेड की नींव रखी गई। यह शेड 65 फीट गुणा 120 फीट के आकार का होगा, जिसकी कुल लागत 16 लाख रुपये निर्धारित की गई है। मंदिर के पास श्रद्धालुओं व ग्रामीणों को छाया और बैठने की सुविधा हेतु लंबे समय से इसकी मांग की जा रही थी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। विशेष रूप से विजय शर्मा, बजरंग लांखलान, डॉ. अजय, दाना राम, सोमबीर, रणसिंह, राजनीश सोनू सरपंच मंढ़ोली, मोटू श्योराण, कर्मवीर, भारत, विकास, करण सिंह, रमेश सहित अन्य ग्रामीणजन मौजूद रहे। जिला पार्षद रविंद्र मंढ़ोली ने बताया कि उनका प्रयास है कि उनके पूरे वार्ड में जमीनी स्तर पर हर गाँव तक विकास पहुंचे और समाज की आस्थाओं से जुड़े स्थल भी सुविधाजनक बनें।

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

निवेश करने जा रहे हैं तो पल्ले 'गांठ' बांध लें ये बातें, अच्छी होगी कमाई

- पहले अपना लक्ष्य तय करें और रिस्क क्षमता जांच लें
- आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर
- रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश सही

म्यूचुअल फंड निवेश का एक पॉपुलर और स्मार्ट तरीका बन चुका है। यह एक ऐसा ऑप्शन है, जिसमें छोटे निवेशकों को भी प्रोफेशनल मैनेजमेंट, डायवर्सिफिकेशन और फ्लेक्सिबिलिटी का फायदा मिल पाता है, लेकिन अपने लिए सही म्यूचुअल फंड का सेलेक्शन करते समय केवल पिछले रिटर्न को देखना ही काफी नहीं होता। सही फंड चुनने के लिए कुछ अहम बातों का ध्यान रखना जरूरी है ताकि निवेश से बेहतर रिटर्न मिले और रिस्क भी कंट्रोल में रहे। सबसे पहले अपनी रिस्क क्षमता को देखते हुए लक्ष्य तय करें। इसके बाद ही निवेश के इस समर में उतरे। अगर इन जरूरी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो सही फंड चुनने में चूक हो सकती है और आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है।

अपना फाइनेंशियल गोल तय करें

सबसे पहले ये समझना जरूरी है कि आप निवेश क्यों कर रहे हैं। घर खरीदने के लिए, बच्चों की पढ़ाई के लिए, रिटायरमेंट प्लान करने के लिए या फिर एसेट्स बनाने के लिए। अगर आपका निवेश का लक्ष्य साफ होगा, तो आपके लिए यह तय करना भी आसान हो जाएगा कि आपके लिए किस तरह का फंड बेहतर रहेगा। मिसाल के तौर पर अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं, जबकि रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश करना सही हो सकता है.

रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

म्यूचुअल फंड की कैटेगरी को समझें

म्यूचुअल फंड्स की कई कैटेगरी हैं। मिसाल के तौर पर इक्विटी, डेट, हाइब्रिड, इंडेक्स, सेक्टोरल, ईएलएसएस वगैरह। हर फंड कैटेगरी की खूबियां अलग-अलग होती हैं। इसलिए यह जानना जरूरी है कि कौन-सा फंड किस तरह की जरूरत के लिए बना है। फंड एक्टिव है या पैसिव, यह जानना भी जरूरी है, क्योंकि इससे निवेश की रणनीति बदल सकती है।

पिछला ट्रैक रिकॉर्ड जरूर चेक करें

म्यूचुअल फंड्स के पिछले रिटर्न भविष्य की गारंटी नहीं देते, लेकिन यह जरूर बताते हैं कि किसी फंड ने बाजार के अलग-अलग साइकल या हालात में कैसा प्रदर्शन किया है। किसी फंड के तीन, पांच और सात साल के औसत रिटर्न की तुलना स्कीम के बेंचमार्क इंडेक्स और कैटेगरी एवरेज से करने पर उसके प्रदर्शन का काफी-कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है।

फंड का पोर्टफोलियो देखें

कोई फंड किन कंपनियों में निवेश कर रहा है, यह जानना भी जरूरी है। इससे पता चलता है कि फंड मैनेजर की इनवेस्टमेंट फिलॉसफी क्या है और यह आपके जोखिम प्रोफाइल से मेल खाती है या नहीं। मिसाल के तौर पर लार्ज कैप स्टॉक्स में ज्यादा निवेश करने वाले फंड, मिड कैप या स्मॉल कैप में ज्यादा इनवेस्ट करने वाली स्कीम के मुकाबले कम रिस्क वाले हो सकते हैं।

फंड मैनेजर का पिछला ट्रैक रिकॉर्ड

म्यूचुअल फंड्स में फंड मैनेजर की भूमिका बहुत अहम होती है। उनका अनुभव और ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि वे बाजार की चाल को कितना समझते हैं और निवेशकों के पैसों को संभालने में कितने माहिर हैं। यह भी देखें कि जिस फंड में आप निवेश करना चाहते हैं, उसके फंड मैनेजर कितने अनुभवी हैं।

निवेश के खर्च पर भी गौर करें

किसी फंड में निवेश करने पर कितना खर्च आता है, यह उसके एक्सपेंस रेशियो से पता चलता है. अगर यह ज्यादा है तो आपकी कमाई पर असर पड़ सकता है। एक्टिव फंड्स में यह रेशियो कुछ अधिक हो सकता है, लेकिन पैसिव या इंडेक्स फंड्स में इसे कम ही रहना चाहिए. साथ ही डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेशियो भी उसी स्कीम के रेगुलर प्लान से कम होता है।

एग्जिट लोड व लॉक-इन पीरियड को समझें

कुछ फंड्स में तय समय से पहले पैसे निकालने पर एग्जिट लोड लगता है। ईएलएसएस जैसे फंड में 3 साल का लॉक-इन पीरियड होता है। कुछ फंड्स में यह 5 साल भी हो सकता है। इसलिए निवेश से पहले यह जानना जरूरी है कि आप जरूर पड़ने पर अपने पैसे कितनी जल्दी निकाल सकते हैं और उसका खर्च कितना होगा।

टैक्स के असर को भी जानें

इक्विटी और डेट फंड्स पर टैक्स की दरें अलग-अलग होती हैं। लॉन्ग टर्म और शॉर्ट टर्म के टैक्स रेट भी अलग होते हैं। निवेश का फैसला करते समय टैक्स इम्पैक्ट को ध्यान में रखें ताकि नेट रिटर्न का सही कैलकुलेशन हो सके।

फंड हाउस का पुराना प्रदर्शन भी देखें

जिस एसेट मैनेजमेंट कंपनी से फंड जुड़ा है, उसकी क्रेडिबिलिटी और पिछले इतिहास को जानना भी जरूरी है। एक मजबूत और भरोसेमंद एएमसी आपके पैसों को बेहतर तरीके से मैनेज कर सकता है। म्यूचुअल फंड में निवेश से अच्छा रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए आंख बंद करके किसी भी फंड में पैसा न लगाएं। अपनी जरूरत, रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन को समझें और ऊपर बताए गए हर प्वाइंट को ध्यान में रखकर फैसला करें। अगर जरूरत हो तो किसी फाइनेंशियल एक्सपर्ट की सलाह भी लें।

पीपीएफ में निवेश से भी जुटा सकते हैं 1.50 करोड़, ट्रिपल 5 का फॉर्मूला आएगा काम

केंद्र सरकार ने निवेशकों खासतौर से सैलरीड क्लास के बीच पॉपुलर स्मॉल सेविंग्स पर ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। जुलाई से सितंबर 2025 तक के लिए पीपीएफ पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलता रहेगा। पीपीएफ की मैच्योरिटी 15 साल होती है, यानी यह लंबी अवधि के निवेश पर फोकस करने वाली स्कीम है। फाइनेंशियल एडवाइजर भी इसे लंबी अवधि के लिए सुरक्षित स्कीम मानते हैं। इस स्कीम के जरिए आप कितना फंड जुटा सकते हैं। क्या 1 करोड़ या 1.50 करोड़। इसका जवाब है आपके द्वारा होल्ड किए जाने वाली अवधि। पब्लिक प्रोविडेंट फंड एक ऐसी सरकारी स्कीम है, जिसे लंबी अवधि की निवेश के लिए डिजाइन किया गया है। अगर इस सरकारी स्कीम में लंबी अवधि तक या पूरे नौकरी पीरियड तक निवेश बनाए रहें तो रिटायरमेंट पर यह सरप्राइज दे सकता है। अब सवाल है कि मैच्योरिटी 15 साल की है तो इसे 25 साल या 30 साल तक होल्ड करना कैसे संभव है। ऐसा संभव है, इसे संभव बनाता है इस स्कीम में एक्सटेंशन से जुड़ा नियम।

पीपीएफ में निवेश के नियम

पीपीएफ की मैच्योरिटी वैसे तो 15 साल की है, लेकिन निवेशक चाहें तो इसे एक बार में 5 साल - 5 साल के लिए कितनी बार भी आगे बढ़ा सकते हैं। इस तरह से यह स्कीम पूरी नौकरी पीरियड में भी बनाए रखी जा सकती है। अगर आप एक्सटेंशन से जुड़े इस नियम का सही से फायदा उठाते हैं तो आपका भविष्य वित्तीय रूप से बहुत हद तक सुरक्षित हो सकता है। हमने यहां 28 साल से 58 साल तक यानी नौकरी के 30 साल निवेश पर कैलकुलेशन दिया है।

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

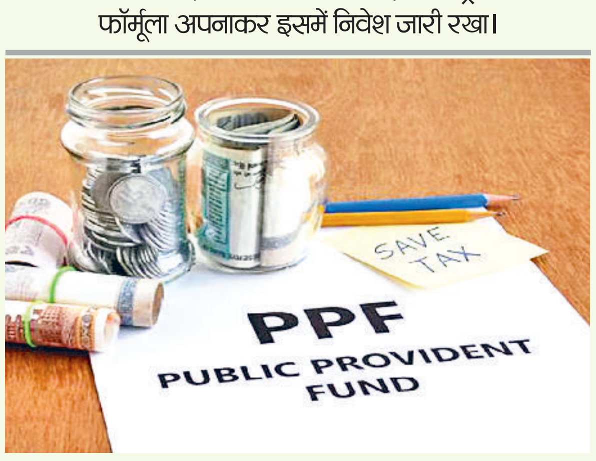

28 से 58 साल तक निवेश

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

इसे ऐसे समझें

- एक फाइनेंशियल ईयर में जमा : 1.50 लाख रुपये
- ब्याज दर : 7.1 फीसदी सालाना
- 15 साल में कुल जमा : 22,50,000
- 15 साल बाद कुल फंड : 40,68,209
- 3 बार एक्सटेंड करने पर
- 30 साल में कुल जमा : 45,00,000
- 30 साल बाद कुल फंड : 1,54,50,911
- ब्याज का फायदा : 1,09,50,911 रुपये

पीपीएफ को एक्सटेंड करने पर क्या हैं फायदे?

यह बचत स्कीम एक्सटेंड करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आप अपने रिटायरमेंट तक इसके जरिए एक बड़ा कॉर्पस जो 1.50 करोड़ रुपये भी हो सकता है, तैयार कर सकते हैं। वहीं ईपीएफ अकाउंट से भी आपको रिटायरमेंट पर अच्छा खासा फंड मिलेगा। ऐसे में आपका बुढ़ापा पूरी तरह से टेंशन फ्री हो जाएगा।

क्लोजिंग बैलेंस पर 89,000 रुपये मंथली इनकम

यहां आपने 30 साल तक निवेश कर, रिटायरमेंट तक 1.50 करोड़ फंड जुटा लिया। अब इसी फंड से मंथली कमाई करना चाहते हैं तो इसे फिर एक्सटेंड कर फायदा उठा सकते हैं. अगर आप स्कीम को बिना कुछ निवेश किए 5 साल के लिए एक्सटेंड किया है तो आपको क्लोजिंग बैलेंस पर सालाना ब्याज मिलेगा। वहीं हर साल एक बार आप पूरी रकम का कितना फीसदी भी निकाल सकते हैं। यह 100 फीसदी तक हो सकता है। यहां 1.50 करोड़ रुपये के क्लोजिंग बैलेंस पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलेगा। यह एक साल में 10,65,000 रुपये होगा. आप एक साल में एक बार में इस पूरी ब्याज की रकम को निकाल सकते हैं। इसे 12 महीनों में बांट दें तो करीब 88,750 रुपये महीना होगा. वहीं इस निकासी पर कोई टैक्स भी नहीं लगेगा।

क्या है पीपीएफ

- पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) एक प्रकार की बचत योजना है जो भारत सरकार द्वारा संचालित की जाती है। यह योजना व्यक्तियों को अपने भविष्य के लिए बचत करने और कर लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।
- लंबी अवधि की बचतः पीपीएफ एक लंबी अवधि की बचत योजना है जिसमें निवेश की अवधि 15 वर्ष होती है।
- कर लाभः पीपीएफ में निवेश करने से आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर लाभ प्राप्त होता है।
- निश्चित ब्याज दरः पीपीएफ पर ब्याज दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है और यह दरें समय-समय पर बदलती रहती हैं।
- सुरक्षित निवेशः पीपीएफ एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकार का समर्थन होता है।

सोने में लौट रहा निवेशकों का भरोसा

गोल्ड ईटीएफ ने 5 वर्ष में दिया बड़ा मुनाफा

विकल्प | बिजनेस डेस्क

अगर आपने पिछले 5 सालों में हर महीने सिर्फ 10,000 रुपये गोल्ड ईटीएफ में लगाए होते, तो आज आपकी रकम करीब 10 लाख हो चुकी होती! एक रिपोर्ट के मुताबिक, येलो कमोडिटी यानी गोल्ड पर बेस्ड ईटीएफ ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। उदाहरण के तौर पर, एलआईसी एमएफ गोल्ड ईटीएफ में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी से कुल 6 लाख रुपये का निवेश करके 5 साल में 9.93 लाख रुपये तक का फंड तैयार किया है। इस दौरान इसका एक्सआईआरआर 20.93% रहा। इगोवहीं, यूटीआई गोल्ड ईटीएफ ने भी 9.92 लाख का रिटर्न दिया, जिसमें एक्सआईआरआर 20.87% रहा। कुल मिलाकर, गोल्ड ईटीएफ ने यह दिखा दिया है कि अगर आप अनुशासित तरीके से एसआईपी करते हैं, तो आपको बेहतर रिटर्न मिल सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में कुल 291 करोड़ रुपये का निवेश आया है। इससे पता चलता है कि गोल्ड में निवेशकों को भरोसा लौट रहा है।

सोना निवेश का भरासेमंद विकल्प

मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ की नया निवेश हुआ। एक्सपर्ट का मानना है कि सोने की मजबूत कीमत और दुनिया भर की अनिश्चितताओं के कारण निवेशकों का सोने में फिर से भरोसा बढ़ रहा है। इससे पता चलता है कि सोना अब भी एक सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का ऑप्शन बना हुआ है। जानकारों के मुताबिक निवेशक फिर से सोने पर भरोसा कर रहे हैं क्योंकि सोना शेयर और बॉन्ड बाजार की अस्थिरता के बीच एक सुरक्षित जगह माना जाता है। मई महीने में सोने की कीमतें ज्यादा बदल नहीं हुईं, जिससे निवेशकों के लिए यह सही समय था कि वे अपने पैसे सुरक्षित जगह लगाएं या अपने निवेश का संतुलन ठीक करें। इसलिए अब ज्यादा लोग सोने में निवेश कर रहे हैं।

क्या है गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ (एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो सोने की कीमतों को ट्रैक करता है। यह निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।

गोल्ड ईटीएफ के लाभ

- **सोने में निवेश :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।
- **विविधीकरण :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद कर सकता है।
- **लिक्विडिटी :** गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- **कम लागत :** गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है।

एसआईपी करने वालों के लिए खुशखबरी

- 5 साल में गोल्ड ईटीएफ ने 10,000 मासिक एसआईपी को 10 लाख में बदला
- एलआईसी, यूटीएल, और इनवेस्को जैसे फंड्स ने 20% से ज्यादा रिटर्न दिया
- मई में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ का निवेश आया, दे रहा बढ़िया संकेत

गोल्ड ईटीएफ- 5 साल का परफॉर्मेंस

गोल्ड ईटीएफ	10,000 मंथली एसआईपी का वर्तमान वैल्यू जो 5 साल पहले शुरू किया था	एक्सआईआरआर (%)
एलआईसी	993,917.25	20.93
यूटीआई गोल्ड	992,677.42	20.87
इन्वेस्को इंडिया	991,639.77	20.83
एक्सिस	990,730.89	20.79
आईसीआईसीआई प्रू	990,214.31	20.77
आदित्य बिड़ला एसएल	988,839.31	20.71
एचडीएफसी	988,609.05	20.7
कोटक	988,529.52	20.7
एसबीआई	986,021.61	20.59
क्वांटम गोल्ड फंड	984,917.72	20.54
निप्पॉन इंडिया ईटीएफ गोल्ड बीईएस	983,924.09	20.5

गोल्ड ईटीएफ की विशेषताएं

- सोने की कीमतों को ट्रैक करना : गोल्ड ईटीएफ सोने की कीमतों को ट्रैक करता है, जिससे निवेशकों को सोने के मूल्य में परिवर्तन के अनुसार लाभ या हानि होती है।
- एक्सचेंज पर कारोबार : गोल्ड ईटीएफ शेयर बाजार में सूचीबद्ध होता है और इसका कारोबार शेयरों की तरह किया जा सकता है।
- लिक्विडिटी : गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- कम लागत : गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है क्योंकि इसमें भौतिक सोना खरीदने और रखने की आवश्यकता नहीं होती है।

स्वास्थ्य बीमा में ईएमआई के लाभ : कवरेज को और किफायती बनाएं

ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक ■ पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाने में होते हैं सक्षम ■ मिलती है मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा

जानकारी
भास्कर नेरुरकर

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, स्वास्थ्य समस्याएं और बढ़ते मेडिकल खर्चे व्यक्तियों और परिवारों दोनों के लिए एक आम समस्या बन गए हैं। हेल्थकेयर की बढ़ती लागत के चलते, बहुत से लोगों के लिए कॉम्प्रिहेंसिव स्वास्थ्य बीमा कवरेज खरीदना पहले से ज़्यादा मुश्किल हो गया है। सुलभता और किफायत को बढ़ाने के लिए, इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (आईआरडीएआई) ने 2019 में यह नियम बनाया कि बीमा प्रीमियम का भुगतान एकमुश्त करने के बजाय, बीमा कंपनियां पॉलिसीधारकों को ईएमआई (समान मासिक किश्तों) में प्रीमियम चुकाने का विकल्प दें। इससे लोगों के लिए अपने खर्चों को बजट में लाना आसान हो जाएगा और यह सुनिश्चित होगा है कि उनके पास अप्रत्याशित मेडिकल खर्चों से सुरक्षा के लिए निरंतर स्वास्थ्य कवरेज हो। ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक हो जाता है, जिससे पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाते हैं।

ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा आपको एक बार में पूरी राशि का भुगतान करने के बजाय, मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा देता है, जिससे अपना बजट बनाना आपके लिए आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आपका वार्षिक प्रीमियम 36,000 रुपये है, तो फाइनेंशियल बाधाओं की वजह से पूरी राशि का एकमुश्त भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ईएमआई भुगतान के ज़रिए, आप 3,000 रुपये की 12 किश्तों में भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं या पूरी राशि को त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक किश्तों में बांटकर भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपको लगातार कवरेज भी मिलती है और आपकी फाइनेंशियल स्थिरता भी बनी रहती है। यह तरीका पॉलिसीधारकों को एक बार में बड़े खर्चों से बचने में मदद करता है, जिससे स्वास्थ्य बीमा प्राप्त करना और मैनेज करना आसान हो जाता है। ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा लेने से कई लाभ मिलते हैं, जो हेल्थकेयर कवरेज प्राप्त करना आसान और सुविधाजनक बनाते हैं. यहां कुछ प्रमुख लाभ दिए गए हैं।

उच्च कवरेज का एक्सेस

एक अच्छा स्वास्थ्य बीमा प्लान होना बहुत जरूरी है, लेकिन कई बार इसकी लागत आपके लिए चिंता का विषय हो सकती है। ईएमआई का विकल्प चुनकर, आप उच्च कवरेज वाले प्लान खरीद सकते हैं। जो कि विशेष रूप से हृदय रोग, कैंसर, किडनी फेलियर या न्यूरोलॉजिकल विकार जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मददगार होते हैं। इन बीमारियों का इलाज महंगा हो सकता है, जिसमें लंबे समय तक मेडिकल केयर, सर्जरी और महंगी दवाओं की आवश्यकता होती है। ईएमआई प्लान के साथ, आप उन गंभीर बीमारियों को कवर करने वाली बीमा पॉलिसी चुन सकते हैं, जिनके लिए एकमुश्त भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे कठिन समय में आपके और आपके परिवार के लिए फाइनेंशियल सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

सीनियर सिटीज़न और रिटायर हो चुके लोगों के लिए उपयुक्त

जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है, स्वास्थ्य बीमा और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, लेकिन आयु से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के कारण कवरेज की लागत अधिक हो सकती है. सीनियर सिटीजन और रिटायर हुए लोगों के लिए, बीमा के लिए बड़ी राशि का एकमुश्त भुगतान चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासतौर पर तब जब उनकी आय एक निश्चित राशि तक ही सीमित हो। ऐसी स्थिति में ईएमआई प्लान सहायक बन जाते हैं। सुविधाजनक भुगतान विकल्पों के साथ, वे सही पॉलिसी प्राप्त कर सकते हैं जो फाइनेंशियल स्थिरता बनाए रखते हुए उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा करती है।

ज़्यादा किफायती

बीमा के लिए एक बड़ी राशि का भुगतान करना कभी-कभी आपकी जेब पर भारी पड़ सकता है। ऐसे में ईएमआई प्लान मददगार साबित होते हैं -वे खर्च को छोटे, आसान भुगतानों में बांटते हैं, जिससे हर किसी के लिए बीमा लेना ज़्यादा किफायती हो जाता है। वार्षिक प्रीमियम का एक बार में भुगतान करके परेशान होने की बजाय, आप आसान किश्तों में भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपका आर्थिक दबाव कम हो सकता है। उदाहरण के लिए, कॉम्प्रिहेंसिव पॉलिसी के लिए एक बार में 50,000 रुपये का भुगतान करने के बजाय, आप एक वर्ष के लिए प्रति माह लगभग 4,167 रुपये का भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं।

परेशानियों को कम करते हैं ऑटोमैटिक भुगतान

कभी-कभी बीमा प्रीमियम का भुगतान करना मुश्किल हो सकता है, खासतौर पर जब आप जीवन में व्यस्त हो जाते हैं। इसलिए कई बीमा कंपनियां ईएमआई भुगतान के लिए ऑटो-डेबिट विकल्प प्रदान करती हैं, जिससे प्रीमियम का भुगतान करना आसान हो जाता है और यह सुनिश्चित होता है कि आपकी पॉलिसी जारी रहे. ऑटो-डेबिट सुविधा के साथ, आपकी चुनी गई आवृति, जैसे मासिक, तिमाही, अर्ध-वार्षिक या वार्षिक के आधार पर, आपका बीमा प्रीमियम ऑटोमैटिक रूप से आपके बैंक अकाउंट से काटा जाता है। यह सुविधा आपको भुगतान से चूकने से बचाती है और भुगतान में देरी की वजह से पॉलिसी समाप्त होने के जोखिम को खत्म करती है। इसके अलावा, यह आपको हर देय तिथि को याद रखने से भी बचाती है। इस विकल्प के साथ, आप बिना किसी फाइनेंशियल दबाव के लगातार कवरेज बनाए रख सकते हैं और हर समय सुरक्षित रह सकते हैं।

टैक्स लाभ : स्वास्थ्य बीमा न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि टैक्स लाभ भी प्रदान करता है, जो आपको पैसे बचाने में मदद कर सकता है। इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80डी के तहत, आप स्वास्थ्य बीमा के प्रीमियम पर खर्च किए गए पैसे पर कटौती का क्लेम कर सकते हैं। यह आपकी टैक्स योग्य आय को कम करता है, जिससे आपका देय टैक्स भी कम हो जाता है। स्वयं, पति/पत्नी, बच्चों और आश्रित माता-पिता के लिए चुकाए गए प्रीमियम पर यह कटौती लागू होती है। अगर आप प्रीमियम का भुगतान ईएमआई पर करना चुनते हैं, तो आपको टैक्स लाभ भी मिलेंगे और छोटे भुगतानों की सुविधा भी। टैक्स फाइल करते समय कटौती का क्लेम करने के लिए, सभी भुगतानों की रसीदें और पॉलिसी डॉक्यूमेंट को प्रमाण के रूप में ज़रूर रखें।

स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प : ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा उन व्यक्तियों और परिवारों के लिए एक स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प है, जो एक बार में बड़ी राशि का भुगतान किए बिना कॉमप्रिहेंसिव हेल्थकेयर कवरेज चाहते हैं। शुरुआत करने के लिए, अपनी हेल्थकेयर की आवश्यकताओं का आकलन करें और विभिन्न बीमा प्लान्स के बारे में जानें। नियम और शर्तों को समझें और अपने बजट के अनुसार भुगतान की आवृति चुनें। पता लगाएं कि क्या कोई अतिरिक्त शुल्क लग रहा है, पॉलिसी की कवरेज में क्या शामिल है और क्लेम कैसे करते हैं, ताकि बाद में कोई समस्या न हो। सही स्वास्थ्य बीमा प्लान और किफायती ईएमआई आपको लंबे समय के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, फाइनेंशियल सुरक्षा और मन की शांति प्रदान करते हैं। याद रखें, आज सही विकल्प चुनने से आपको भविष्य में मेडिकल एमरजेंसी के दौरान फाइनेंशियल तनाव से बचने में मदद मिल सकती है।

(लेखक बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस के हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन टीम के हेड हैं।)

बारिश के बाद कपास, बाजरे और मूंग की फसल में दिखाई दी रौनक

बारिश के बाद इलाके में लहलहाती कपास की फसल

जिले में 4,62,000 एकड़ में फसल को मिलेगा लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| ढिगावा मंडी

जिले में करीब चार लाख 62 हजार एकड़ क्षेत्रफल में कपास, बाजरा, मूंग और ग्वार के साथ-साथ अन्य फैसले व पशुचरे की खेती की गई है। भिवानी जिले का राजस्थान के साथ लगता लोहारू, ढिगावा मंडी, बहल पहले ही डार्कजॉन क्षेत्र है अब दो दिन पहले इंद्रदेव की मेहरबानी से डार्कजोन क्षेत्र में हुई अच्छी बारिश से कपास, बाजरा, मूंग व अन्य फसलों के लिए वरदान साबित हुई। अधिकतम तापमान से झुलसने वाली फसलों में बारिश से रौनक लौट आई है। इससे किसानों को भी अब कपास, बाजरा, मूंग और ग्वार की फसल में अच्छे उत्पादन की उम्मीद जगने लगी है। वर्षा से तापमान में गिरावट के साथ ही पशु चारे, कपास, बाजार, मंग व सब्जी फसल को बहुत अधिक फायदा हुआ है। फसल के अच्छे भाव मिलने से डार्कजोन क्षेत्र में भी किसानों ने गत तीन चार वर्षो से कपास व सब्जी फसल को अधिक बढ़ावा देना शुरू कर दिया है। भिवानी जिले की बात करें तो जिलेभर में करीब 4 लाख 62 हजार एकड़ पर फसलों की बिजाई की गई है।

मौसम अनुकूल रहा तो उत्पादन बढ़ेगा

दो दिन पहले भी वर्ष के बाद अब आसमान में बादल छाए रहते हैं वह हल्की-हल्की बूंदाबांदी हो जाती है जिससे फसलों का रंग गहरा हरा हो गया है। कपास की फसल पर फूल आने शुरू हो गए हैं तो वहीं मूंग और ग्वार की फसल में भी बढ़वार देखने को मिली है। किसानों का कहना है कि वर्षा ने फसलों में जान डालती है। मौसम अनुकूल रहा तो अबकी बार अच्छी फसल उत्पादन की उम्मीद है।

अधिक कीटनाशक का उपयोग न करें

कृषि अधिकारी डॉक्टर चंद्रभान श्योराण ने बताया कि वर्षा के मौसम में किसानों के सफेद सोने (कपास) पर ग्रहण ना लगे, इसके लिए किसानों को अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। ताकि कपास को रस चूसक कीटों से सुरक्षित किया जा सके। इन दिनों कपास में रस चूसक कीटों का प्रकोप अधिक रहता है। इसके लिए किसानों को अपने खेत में बार-बार जाकर निरीक्षण करना चाहिए अगर कहीं कोई किट दिखाई दे तो कृषि अधिकारियों से संपर्क करने के बाद ही कीटनाशक का उपयोग करें।

खबर संक्षेप

गंदे पानी से आजाद नगर निवासी हुए कैद

भिवानी। पतराम गेट के सामने स्थित आजाद नगर में डालमिया बगीची के पास गली में सीवर ओवरफ्लो व गंदे पानी ने आजाद नगर के निवासियों को कैद नगर वासियों के रूप में बदल दिया। वहां गली में सीवरेज का पानी भरने से महिलाएं व बच्चे घर से बाहर निकल नहीं पा रहे है, पीने का पानी गंदा आ रहा है। पिछले एक सप्ताह से गली की महिलाएं स्थानीय पार्षद, नगर परिषद चेयरपर्सन प्रतिनिधि व संबंधित विभाग के अधिकारियों से फोन लगाकर अपनी दुर्दशा बारे अवगत करा चुके है। बीते रोज भी क्षेत्रवासियों ने प्रदर्शन करके रोष प्रकट किया था।

जन्मदिन पर राधिका ने स्कूल में किया पौधरोपण

तोशाम। तोशाम निवासी बजरंग कौशिक की सुपुत्री राधिका ने अपने जन्मदिन के अवसर को विशेष बनाते हुए लक्ष्य हाई स्कूल, तोशाम में अपनी मां के नाम पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम उठाया। इस अवसर पर उनके परिवार के सदस्य भी मौजूद रहे। राधिका की यह पहल समाज को यह संदेश देती है कि प्रत्येक खुशी का अवसर प्रकृति के साथ साझा करना चाहिए। इस अवसर पर बजरंग कौशिक ने कहा कि जैसे देश का सैनिक निष्काम भाव से देश की रक्षा करता है, वैसे ही एक पेड़ भी निःस्वार्थ भाव से मनुष्य को ऑक्सीजन, फल, छाया और औषधियां प्रदान करता है।

सवा लाख जप अनुष्ठान कार्यक्रम आठ को

भिवानी। हालुवास गेट फाटक पार स्थित जैन मुनि आश्रम में आठ जुलाई मंगलवार को सवा लाख जप अनुष्ठान का आयोजन किया जाएगा। आश्रम की संचालिका डॉ. उषा जैन ने बताया कि तेरापंथ प्रणेता महान तपस्वी, क्रांतिकारी, युगद्रष्टा आचार्य भिक्षु के 300वें जन्मदिवस के मंगल प्रसंग पर जैन मुनि आश्रम में सवा लाख जप अनुष्ठान किया जाएगा। जप अनुष्ठान पूज्य गुरूदेव मनक मुनि महाराज के पावन सान्निध्य में आठ जुलाई मंगलवार सांय पांच बजे से होगा। इस दौरान सवा लाख दिव्य जप अनुष्ठान, प्रवचन एवं भजन कार्यक्रम होंगे।

ऐतिहासिक होगा दक्ष प्रजापति जयंती समारोह

चरखी दादरी। 13 जुलाई रविवार को इस वर्ष भिवानी में होने वाले राज्य स्तरीय गुरू श्रीदक्ष प्रजापति जयंती समारोह बड़े धूमधाम से मनाया जाएगा, जो ऐतिहासिक होगा। भारतीय प्रजापति हीरोज ऑर्गेनाइजेशन (बीपीएचओ) के जिलाध्यक्ष विनोद सिंहमार पार्षद ने बताया कि यह दिन समाज के लिए विशेष महत्व रखता है। समाज में जागरूकता और एकजुटता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बीपीएचओ द्वारा एक दिन समाज के नाम नामक विशेष मुहिम भी चलाई जा रही है। उन्होंने समाज के सभी वर्गों युवा, मातृशक्ति, वरिष्ठजन और बच्चों से अपील की कि वे इस दिन को अपनी पहचान, संस्कृति और संगठन के प्रति समर्पित करें और पूरे उत्साह से ऐतिहासिक आयोजन में भाग लें।

सूबेदार रणसिंह श्योराण के निधन पर शोक जताया

बाढड़ा। गांव काकड़ौली हटठी निवासी युवा नेता नवीन श्योराण के पिता सूबेदार रणसिंह श्योराण का 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन पर अनेक सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने गहरा शोक जताया है। सूबेदार रणसिंह श्योराण के निधन पर जजपा हलकाध्यक्ष विजय श्योराण, सरपंच इंदराज दिसौदिया, पूर्व सरपंच मांगेराम, कप्तान रिसाल सिंह, सूबेदार अतरसिंह श्योराण, मीरसिंह हवलदार, हवासिंह, सतपाल श्योराण, नरेंद्र सिंह, कृष्ण श्योराण, एडवोकेट सुनील श्योराण आदि ने शोक जताया।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी रोशनी शर्मा को पौधा भेंटकर अभियान का किया शुभारंभ

सामाजिक कार्यकर्ता ने साइकिल से घर-घर पहुंचाया हरियाली का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

पर्यावरण की रक्षा केवल कागजों में दिखाने से नहीं बल्कि उस दिशा में कर्म से होती है। इसी सोच के साथ सामाजिक कार्यकर्ता संजय रामफल ने मानसून में घर-घर पौधे पहुंचाने की अपनी अनूठी पहल का शुभारंभ किया है। संजय ने शनिवार को पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी रोशनी शर्मा को पौधा भेंट कर अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि प्रकृति से प्रेम ही आने वाली पीढ़ियों को बचा सकता है, हम सबको नेक काम में भागीदार बनना चाहिए और मनुष्य को अपने जीवन काल में काम से कम एक पौधा तो अवश्य लगाना चाहिए तभी हम पर्यावरण और अपनी प्रकृति को श्रृंगार कर सकते हैं। संजय रामफल खुद साइकिल पर मोहल्लों में निकले और घर-घर पौधे बांटे।

इस पहल का मकसद लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि पौधें लगाना ही नहीं बल्कि पालना और बचाना भी हमारा कर्तव्य है संजय रामफल ने कहा कि मानसून पौधारोपण का सबसे अच्छा समय होता है और हर व्यक्ति को कम से कम एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज पौधरोपण हम सबकी जरूरत बन गई है। जहां भी खाली जगह दिखाई दे तो एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए।

भिवानी। सामाजिक कार्यकर्ता संजय रामपाल पूर्व शिक्षा अधिकारी रोशनी शर्मा को पौधा भेंट करते। फोटो :हरिभूमि

डीएवी स्कूल में पौधरोपण कर मनाया वन महोत्सव

भिवानी। डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में बड़े पैमाने पर पौधरोपण कर वन महोत्सव धूमधाम से मनाया। प्राचार्या के आह्वान पर सभी कक्षाओं के विद्यार्थी अपने-अपने घर से दो-दो पौधें लेकर उपस्थित हुए और उन्हें विद्यालय परिसर में रोपित किया तथा उनकी परिचर्या के लिए संकल्प लिया।

इस अवसर पर वन महोत्सव से संबंधित स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया, साथ ही छठी और सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने सब्जियों की पेंटिंग की। चौथी और पांचवी कक्षा के विद्यार्थियों को निकटतम नर्सरी की यात्रा संपन्न करवाई। कक्षा बारहवीं के छात्रों ने नुक्कड़ नाटक का मंचन करके वृक्षों की महत्ता और उपादेयता को दर्शाया। प्राचार्या कुसुम शर्मा ने बताया कि वृक्ष हमारे जीवनदाता हैं, वे हमें प्राणवायु ऑक्सीजन देते हैं, जो हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। आजकल हम प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन समस्याओं से निपटने का सबसे प्रभावी तरीका अधिक से अधिक पेड़ लगाना है।

पूर्व सांसद अतुल राय के जन्मदिन पर किया अनूठा पर्यावरण व पशु सेवा कार्य

भिवानी। आजकल लोग दिखावे के चक्कर में फंसकर अपने जन्मदिन या अन्य कार्यक्रम में हजारों रूपये खर्च कर देते है, जबकि लोगों को चाहिए कि वे जन्मदिन या अन्य अवसरों पर रूपये खर्च करने की बजाए पर्यावरण संरक्षण एवं गौसेवा की दिशा में कार्य करें, ताकि अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिल सकें। इसी कड़ी में पूर्व सांसद अतुल राय के जन्मदिन पर अतुल राय बिग्रेड हरियाणा की भिवानी इकाई ने शनिवार को प्रेरणादायक पहल करते हुए पर्यावरण संरक्षण, पशु-पक्षी और गौसेवा का अनूठा कार्य किया।इस विशेष दिन को केवल उत्सव के रूप में मनाने की बजाय, कर्मचारियों ने समाज और प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का प्रदर्शन किया। बिग्रेड सदस्यों ने महम रोड स्थित गौशाला में गौसेवा की। इसके उपरांत शहर में पौधरोपण किया तथा पक्षियों के लिए दाना-पानी का प्रबंध भी किया। विरेंद्र परमार व संजय तंवर ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य हरित आवरण को बढ़ाना और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना था। उन्होंने बताया कि पौधरोपण के साथ-साथ बिग्रेड सदस्यों ने पशु-पक्षी और गौसेवा में भी सक्रिय योगदान दिया। उन्होंने विशेष रूप से गौसेवा पर जोर दिया गया, जो भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है।

एक पेड़ मां के नाम पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

पौधरोपण करते जिला प्रधान रिंकू जोगी।

चरखी दादरी। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता को जन-जन तक पहुंचने के उद्देश्य से एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत झोझूकलां में हलवाई एसोसिएशन जिला प्रधान रिंकू जोगी ने आम, बड़, पीपल, मीठा नीम समेत कई छायादार और फलदार पौधे रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने जीवन में कम से कम एक पेड़ अवश्य अपनी मां के नाम पर लगाएं और पर्यावरण के संरक्षण में भागीदारी निभाएं। रिंकू जोगी ने कहा कि बरसात का मौसम पौधारोपण के लिए सबसे अनुकूल समय होता है। इस समय रोपे गए पौधों को प्रकृति से भरपूर जल प्राप्त होता है, जिससे उनकी बढ़वार तेज होती है।

पौधरोपण अभियान के तहत महंत योगी केशवनाथ ने गांव सेहर के शिव धाम पर दो एकड़ में लगाए पौधे

ढिगावा मंडी। राजस्थान के साथ लगते इस बालू रेत के टीलों गांव को हरा भरा बनाने के लिए क्षेत्र के गांव ढाणा जोगी में स्थित बाबा बाड़ी नाथ आश्रम के 32 दूनी के पंच महंत योगी केशवनाथ महाराज ने युवाओं के साथ मिलकर पौधारोपण को लेकर विशेष अभियान चल रहे हैं। महंत योगी केशवनाथ महाराज ने ढाणा जोगी के शिव धाम के बाद अब क्षेत्र के गांव सेहर के शिव धाम में करीब दो एकड़ क्षेत्र में हरा भरा बनाने के लिए युवाओं की टोली के साथ मिलकर शिव धाम में बड़, पीपल, निम की त्रिवेणी के साथ सैकड़ो विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए। महंत योगी केशव नाथ महाराज ने बताया कि इस बार लोगों में पौधारोपण को लेकर युवाओं में ऐसा जोश है कि वह हर जगह पौधे लगाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। महंत योगी केशव नाथ ने कहा कि गांव के ग्रामीण, स्कूलों के विद्यार्थी, ग्राम पंचायतो के सरपंचो के साथ-साथ कई स्वयंसेवी संस्थाएं इस अभियान का हिस्सा बन रही हैं। अनेक प्रकार से लोगों को पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। श्री महंत ने बताया कि इस बार अच्छी वर्षा होने की उम्मीद है जिससे हरियाली बढ़ेगी तो वातावरण भी शुद्ध होगा।

संस्कार स्कूल में पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश, देखभाल की जिम्मेदारी ली

चरखी दादरी। सुभाष चौक स्थित संस्कार पब्लिक स्कूल के प्रांगण में बच्चों ने पौधरोपण किया। स्कूल संचालक डॉ. सुभाष जैन ने बच्चों को बताया कि पौधरोपण पर्यावरण, समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वृक्ष मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, हमें छाया प्रदान करते हैं, तापमान को नियंत्रित करते हैं। कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।उन्होंने कहा कि वृक्ष वर्षा चक्र को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं, ध्वनि प्रदूषण को कम करते हैं। धूल व धुएं को अवशोषित करके हवा को शुद्ध करते हैं। स्कूल मुख्याध्यापिका अर्चना शर्मा ने बच्चों को बताया कि वृक्षों से हमें स्वच्छ हवा मिलती है जो हमारे शरीर की सभी बीमारियों को दूर करने में सहायक होती है। वृक्ष बाढ़ तथा सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं को भी नियंत्रित करने में सहायक होते है। पौधरोपण अभियान बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देता है। भावी पीढ़ियों को भी प्रकृति के संरक्षण का महत्व सिखाता है। विद्यालय के सभी छात्रों ने शपथ ली कि सभी एक-एक पौधा लगाएंगे और उसकी देखभाल करेंगे।

बवानीखेड़ा। बरसाती पानी की निकासी के आदेश देकर कार्य करवाते हुए।

विधायक के भाई राकेश ने सुनी ग्रामीणों की समस्याएं तुरंत बरसाती पानी की निकासी के दिए आदेश

बवानीखेड़ा। हल्का बवानी खेड़ा के गांव खरक में बरसाती पानी की निकासी के लिए परेशान लोगों की समस्या के समाधान को लेकर विधायक 'कपूर सिंह वाल्मीकि' के छोटे भाई 'राकेश वाल्मीकि' खरक पहुंचे और ग्रामीणों की समस्याएं सुनी। उन्होंने अधिकारियो से बोल कर तुरंत प्रभाव से गलियों का बरसाती पानी इंजन लगवाकर इसे निकलवाने के आदेश दिए। उनके आदेश पर तुरंत प्रभाव से बरसाती व गंदे पानी की निकासी को निकालने का प्रबंध किया गया। ग्रामीणों ने विधायक कपूर वाल्मीकी व उनके छोटे भाई राकेश वाल्मीकि का आभार व्यक्त किया। राकेश वाल्मीकि ने बताया कि पूरा हलका उनका घर है और वे हलके की हर समस्या का समाधान करने का प्रयास करते हैं।

आम नागरिक पानी की कीमत को समझें और पानी को व्यर्थ ना बहाएं , बरसात के पानी का संरक्षण करें : किरण चौधरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

तोशाम। आयोजित कार्यक्रम में लोगों की समस्याएं सुनती राज्य सभा सांसद किरण चौधरी।

राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने आमजन का आह्वान करते हुए कहा कि वे पानी की कीमत को समझें। पानी की एक-एक बूंद कीमती है। ऐसे में पानी को व्यर्थ ना बहाएं और बरसात के पानी का संरक्षण करें। उन्होंने कहा कि सभी नहरों में पानी आ गया है। सबसे पहले जलघरों में पानी भरा जाएगा ताकि प्रत्येक नागरिक को पीने के लिए स्वच्छ जल मिले।

उन्होंने कहा कि लोगों की भलाई और विकास कार्यों के लिए वे राजनीति में आई हैं। सांसद किरण चौधरी ने शनिवार को गांव दिनोद, भारीवास, झूली, खावा, मंढ़ान, ढाणी कतवार, कतवार, बुसान, साहलेवाला आदि गांवों में जन समस्या सुनते हुए ग्रामीणों को संबोधित कर रहीं थी। सांसद ने कहा कि भाजपा सरकार पारदर्शिता के साथ काम कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश निरंतर प्रगति पर है। देश की अर्थव्यवस्था निरंतर मजबूत हो रही है। जनसंपर्क अभियान के दौरान सांसद ने कहा कि गांव दिनोद में 40 करोड़ रुपये की लागत से नए जलकर का निर्माण करवाया जाएगा। पाइप लाइन डालकर घर-घर पेयजल पहुंचाया जाएगा इसके अलावा सीवरेज सिस्टम डाला जाएगा। उन्होंने डेढ़ करोड़ रुपए की लागत से बनी पानी निकासी की लाइन का उद्घाटन भी किया। उन्होंने गांव मंढान में 1.37 करोड रुपए लागत से बनने वाले सड़क मार्ग का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि छह करोड़ रुपए की लागत से संडवा डिस्ट्रीब्यूटर का नवीनीकरण किया जाएगा। सांसद ने भारीवास में 21 लाख रुपए की लागत से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बने हाल कमरे का तथा 36 लाख रुपए की लागत से जोहड़ के रास्ते का उद्घाटन किया।

विधायक उमेद पातुवास ने लोगों की समस्याएं सुनीं

बाढ़ड़ा। प्रदेश सरकार ग्रामीण विकास के लिए अनेक योजनाओं की सौगात देने जा रही है जिससे आमजन को पूरा लाभ मिलेगा। सीएम नायब सिंह सैनी के आशीर्वाद से दादरी जिले को विकास के क्षेत्र में अनेक योजनाएं मिलेंगी।

यह बात भाजपा विधायक उमेद पातुवास ने गांव रामलवास, बाढड़ा, बेरला, कादमा में आमजन की समस्याएं सुनकर समाधान करते हुए कही। उन्होंने कहा कि ने कहा कि पहले खनन क्षेत्रों के गांवों के ग्रामीणों को मुलभूत सुविधाओं के लिए तरसना पड़ता था लेकिन भाजपा सरकार में यहां के पहाड़ों के खनन से प्राप्त राशी को इसी क्षेत्र के गांवों में खर्च किया जा रहा है।

कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी

दुनिया में रक्तदान से बढ़कर दूसरा कोई दान नहीं: सर्राफ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

वैश्य महाविद्यालय, भिवानी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई और अंतरराष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन के संयुक्त तत्वावधान में कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य पर शहीदों को श्रद्धांजलि स्वरूप महाविद्यालय के सेमिनार का आयोजन किया गया। रक्तदान शिविर का आयोजन प्राचार्य डॉ संजय गोयल एवं डीन यूथ वेलफेयर प्रो धीरज त्रिखा के नेतृत्व में किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक घनश्याम सर्राफ, विशिष्ट अतिथि के रूप में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमेन डॉ पवन कुमार,वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के अध्यक्ष एडवोकेट शिवरत्न गुप्ता, महासचिव डॉ पवन बुवानी वाला ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग रक्तदान करके जीवन बचाने की कड़ी में अहम भूमिका निभा सकता है। उन्होंने इस तरह के जनसेवी कार्यों से प्रेरणा लेने की बात कही। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के अध्यक्ष एडवोकेट शिवरत्न गुप्ता ने कहा कि कि आज युवा वर्ग ने रक्तदान कर बड़ा पुण्य का कार्य किया है। क्यों कि रक्तदान से बढ़कर दूसरा कोई दान नहीं है। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाईयों के स्वयंसेवकों द्वारा रक्तदान कैंप में बढ़ चढ़ कर भाग लेना सराहनीय है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के महासचिव डॉ पवन बुवानी वाला ने अपने संबोधन में रक्तदान शिविर की प्रशंसा करते हुए युवा स्वयंसेवकों को रक्तदान के लिए आगे आने की बात कही। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है,रक्तदाता स्वेच्छा से रक्तदान करके मानवता की सेवा कर सकता है।

भिवानी। रक्तदाताओं को बैज लगाकर सम्मानित करते विधायक घनश्याम सर्राफ।

रक्त की एक बूंद असहाय को प्रदान करती है नया जीवनः डॉ पवन शर्मा

भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि रक्त की एक बूंद असहाय को नया जीवन प्रदान करती है। उन्होनें कहा कि रक्त की एक यूनिट 3 लोगों को जीवन दान देने का कार्य करती हैं तथा हर व्यक्तियों को कई प्रकार की बीमारियों से बचाती हैं उन्होंने कहा कि महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई और अंतरराष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन के संयुक्त तत्वावधान में कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य पर शहीदों को श्रद्धांजलि स्वरूप लगाया गया रक्तदान शिविर सराहनीय है। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमेन डॉ पवन कुमार ने कहा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ पवन शर्मा ने कहा कि रक्त की एक बूंद असहाय को नया जीवन प्रदान करती है। रक्तदान से बढ़कर दूसरा कोई दान नहीं है।

मुर्गा फार्म में गंदगी का आलम, घरों में भिन भिनाते मक्खी-मच्छर, लोग परेशान

गांव कैरू क्षेत्र में बसी ढ़ाणी झेरोवाली के मकान में पड़ी मक्खियां।

भिवानी। गांव कैरू के पूर्व दिशा में बसी झेरोवाली ढ़ाणी निवासियों के लिए मुर्गा फार्म परेशानी का सबब बना हुआ हैं, जिसकी वजह से ग्रामीणों का घरों में रहना और बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। मुर्गा फार्म की वजह से उनके घरों में मक्खियां मंडरा रही है, जिसकारण ग्रामीण व पशु बीमार हो रहे है। ग्रामीणों ने तोशाम एसडीएम को ज्ञापन सौंपकर समस्या से छुटकारा दिलवाने की मांग की है। एसडीएम तोशाम को दी शिकायत में गांव कैरू निवासी भगवान यादव, जयपाल, राजू यादव, सुखबीर, बिक्रम, देवेंद्र, सोमबीर, सुंदरपाल सरपंच, सरपंच प्रतिनिध सुभाष ने बताया कि गांव कैरू की पूर्व दिशा में झेरोवाली ढ़ाणी में करीब 60 से 70 मकान है, यहां रहने वाले ग्रामीण खेतीबाड़ी व पशुपालन का कार्य करते है। ढाणी में गांव ढाब-ढाणी निवासी बलवान ने कुछ वर्ष पहले मुर्गा फार्म बनाया था, जिसमें गंदगी और अव्यवस्था बनी हुई है। इसकी वजह से आस-पास क्षेत्र में मच्छर, मक्खी भिन्न भिनाते रहते हैं, जिस वजह से यहां पर रहना भी मुश्किल हो गया है। ग्रामीणों के साथ उनके पशु भी बीमार होते रहते है। ग्रामीणों ने जब मुर्गा फार्म संचालक को शिकायत की तो उसने मक्खियों व मच्छर के समाधान का आश्वासन दिया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की। ग्रामीणों ने बताया कि पिछले साल भी वे प्रशासन से मुर्गा फार्म बंद करने की गुहार लगा चुके, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

घरेलू कामकाज के साथ पूरा करवाया होमवर्क,पीटीएम मीटिंग में हुआ खुलासा

'घर में कितनी बोरी गेहूं, कितनी बोरी चने जैसे उदाहरण दे विद्यार्थियों को सिखाई जोड़ व घटा'

प्राइमरी स्कूलों में पीटीएम मीटिंग की आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

बवानीखेड़ा के एक स्कूल में अभिभावकों से बातचीत करती प्राचार्या व भिवानी के एक सरकारी स्कूल में पीटीएम के दौरान बच्चों व अभिभावकों को संबोधित करता एक वक्ता।

महीने के पहले शनिवार को सरकारी स्कूलों में शिक्षक, अभिभावक के साथ मीटिंग हुई। शिक्षकों ने अभिभावकों से स्कूल में करवाई गई पढाई के बारे में फीडबैक लिया। साथ ही ग्रीष्मवकाश के दौरान बच्चों को दिए गए होमवर्क को पूरा करवाने में अभिभावकों का कितना सहयोग रहा, की भी जानकारी ली गई। पहली बार प्राइमरी स्कूलों में इस तरह का संवाद हुआ। टीचरों ने अभिभावकों से बच्चों के होमवर्क को पूरा करवाने में कितना और किस तरह का सहयोग किया। अभिभावकों का तर्क था कि घरेलू कामकाज के साथ होमवर्क को पूरा करवाया गया।

मसलन घर अनाज की रखी बोरियों की संख्या और मंडी में बेची गई बोरियों का कुल कितनी हुई , इस तरह की बातों से जोड़ व घटा के सवाल सिखाए गए। अभिभावकों का कहना था कि बच्चे ज्यादा प्रक्टीकल करवाने व सामने रखी चीज की जानकारी देने पर ही ज्यादा समझ पाते है। इसी दौरान दूसरे अभिभावक ने बताया कि उन्होंने अपने बच्चों से पूछा कि घर में 13 बोरी गेहूं तथा चार बोरी चने की रखी है। बताओं कितनी हुई। इस पर बच्चा तत्काल उठा और एक एक कर सभी बोरियों की गिनती करके बोला कि 17 बोरी हुई। इसी तरह बच्चे के होमवर्क में दिए गए जोड़ व घटा के सवालों को हल करवाया। इस दौरान एक महिला अभिभावक ने बताया कि उसने बच्चे से पूछा कि दिन में कितनी बार खाना खाते हो और आज कितनी बार खाना खाया। अगर एक बार का खाना नहीं दिया जाए तो पूरे दिन में कितनी बार खाना खाया। इस तरह के सवालों से घटा के सवाल सिखाए गए। सवालों के अलावा गिनती व पहाड़े भी इसी तरह से सिखाए गए। एक अभिभावक ने बताया कि दुकान से राशन लाने के लिए बड़े बच्चे के साथ इसी बच्चे को भेजते थे। बाद में घर आने पर बड़े की बजाए छोटे बच्चे से ही हिसाब मांगते कि कितने पैसे की चीनी और चाय की पत्ती आई, पैंसिल कितने पैसे की मिली,कुल कितने पैसे खर्च हुए। इस तरह की बातों से बच्चों में अपने आप जोड़ व घटा के सवालों के जवाब देने लगते है।

परिजन-शिक्षक बैठक में सीआरसी ने किया निरीक्षण

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के ढुंढ़वा जोहड़ स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला में परिजन-शिक्षक "पीटीएम" बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें दर्जनों परिजनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक में बवानी खेड़ा कलस्टर की सीआरसी-कम-प्राचार्या संतोष भाकर, एबीआरसी राज कुमारी, सिम प्रियंका निरीक्षण के लिए पहुंची। परिजन-शिक्षक "पीटीएम" बैठक में सीआरसी-कम-प्राचार्या संतोष भाकर ने अभिभावकों को बताया कि समय समय पर विभाग द्वारा ऐसी बैठकों का आयोजन किया जाता है। इसलिए परिजनों को विद्यालय पहुंचकर शिक्षकों से मिलकर अपने बच्चों की शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी लेनी चाहिए और बच्चों में सुधार के प्रति मंथन करना चाहिए। वहीं उन्होंने बताया कि अक्सर बच्चे शिक्षकों से कतराते हैं और इस समस्या को बहुत बड़ा मान लेते हैं इसलिए शिक्षकों से मिलकर बच्चों की इस समस्या का भी समाधान करवाना चाहिए। तत्पश्चात प्राचार्या द्वारा उपस्थिजनों को बताया कि यदि कोई सुझाव शिक्षा संबंधित या विद्यालय की गतिविधियों के प्रति सुधार संबंधित हो तो वह भी शिक्षकों संग साझा किया जा सकता है। तत्पश्चात उन्होंने बच्चों से रूबरू होकर उनकी सहपाठी बनकर उनके सवाल जवाब किए।

स्कॉलरशिप के पैसों की भी अभिभावकों ने मांगी जानकारी

पीटीएम मीटिंग में अभिभावकों व शिक्षकों के बीच पढाई को लेकर खूब चर्चा हुई। बच्चों का होमवर्क पूरा करवाने तथा नई नई जानकारी देने के बारे में बताया गया। बच्चों का होमवर्क पूरा करवाने पर चर्चा पूरी हुई तो एक स्कूल में अभिभावक ने स्कूल मुखिया से पूछा कि सर अभी तक हमारे बच्चे की स्कॉलरशिप नहीं आई है। बैंक में जाते है तो बताया जाता है कि स्कूल में पता करें। जब संबंधित टीचर से जानकारी मांगी जाती है तो बताया जाता है कि वे बैंक में जाकर अपने बैंक खाते में इसकी पूरी जानकारी हासिल करे। अभी तक क्लीयर नहीं हो पा रहा।

खबर संक्षेप

नवयुग स्कूल के बच्चों ने सुलेख में दिखाई प्रतिभा

चरखी दादरी। गांव मकड़ानी स्थित नवयुग विद्यालय के निदेशक अजय जाखड़ की अगुवाई में हिंदी व अंग्रेजी विषय आधारित सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न कक्षाओं से बच्चों ने बढ़ चढ़कर उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। विद्यार्थियों ने अपनी सुंदर लिखावट के जरिए जीवन में सुलेख को अपनाने के लिए सभी को प्रेरित किया।

नशामुक्ति, लव मैरिज, लिव इन रोकने का किया आह्वान

भिवानी। ग्रामीण अंचल ब्राह्मण जनकल्याण समिति की बैठक का आयोजन ब्राह्मण धर्मशाला में हुआ। बैठक की अध्यक्षता प्रधान सतबीर शर्मा गोठड़ा ने की। आज के समय में समिति द्वारा किए जनहित कार्यों की समीक्षा की गई। समाज में नशामुक्ति, लव मैरिज, लिव इन रिलेशनशिप जैसी बुराईयों को रोकने का आह्वान किया। और इन पर विस्तार से चर्चा की। निर्माणाधीन धर्मशाला परिसर में सभागार भवन का निर्माण कार्य भी शुरू करवाया।

आज बच्चे केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं

चरखी दादरी। एचडी स्कूल बिरोहड़ में छठी से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अम्बर हाउस ने एक सृजनात्मक एवं शैक्षणिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं अंग्रेजी विषयों से संबंधित मॉडल, चार्ट, लाइव प्रोजेक्ट्स और ग्रीष्मकालीन गृहकार्य की रचनात्मक प्रस्तुति दी। विद्यार्थियों की रचनात्मकता, नवाचार व शोध क्षमता को उजागर करने वाला एक प्रेरणादायक अवसर रहा। छात्रों ने वायुमंडल परतें, इलेक्ट्रोमैगनेटिज्म, सौर ऊर्जा, जल शोधन यंत्र, स्मार्ट डस्टबिन की जानकारी दी।

कड़ी मेहनत, लगन व समर्पण का परिणाम मुक्केबाज ललित की उपलब्धि: टेकराम

मिताथल गांव के ललित ने वर्ल्ड पुलिस गेम्स में जीता स्वर्ण पदक, ग्रामीण खुश

जूनियर नेशनल 2016 में गोल्ड, 2020 में ऑल इंडिया विवि में कांस्य, 2021 में खेलो इंडिया, 2023 में ऑल इंडिया पुलिस गेम्स 2023 में सीनियर नेशनल और 2024 में ऑल इंडिया पुलिस गेम्स में गोल्ड मेडल जीता

स्वर्ण पदक विजेता ललित।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

मिनी क्यूबा के नाम से विख्यात भिवानी जिले के गांव मिताथल निवासी मुक्केबाज ललित ने 30 जून से 6 जुलाई तक अमेरिका में आयोजित वर्ल्ड पुलिस गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर देश एवं प्रदेश का नाम रोशन किया है। उनकी ऐतिहासिक जीत से खेलप्रेमियों और पूरे जिले में खुशी की लहर दौड़ गई है। कोच टेकराम व ललित के बड़े भाई सुधीर पहलवान ने बताया कि ललित अब तक वर्ष 2016 में जूनियर नेशनल में गोल्ड मेडल, वर्ष 2017 में जूनियर नेशनल में कांस्य पदक, 2020 में ऑल इंडिया विश्वविद्यालय में कांस्य पदक, 2021 में खेलो इंडिया में गोल्ड मेडल, 2023 में ऑल इंडिया पुलिस गेम्स में गोल्ड मेडल, 2023 में सीनियर नेशनल चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल तथा वर्ष 2024 में ऑल इंडिया पुलिस गेम्स में गोल्ड मेडल जीत चुके है।

ललित ने अब पुनः वर्ल्ड पुलिस गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर खेल प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया हैं। गांव मिताथल सहित समस्त जिले को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवांवित करने का काम किया है। कोच टेकराम व सुधीर पहलवान ने बताया कि मुक्केबाज ललित जिद, जुननू व जज्बे की मिसाल है। मुक्केबाजी का शौक लेकर वर्ष 2016 में वे पहली बार रिंग में उतरे, तब हालात हररोज उससे लड़ते थे। बारिश में टपकती घर की छत, आर्थिक तंगी उसे हर मोर्चे पर परेशान करती थी, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। जिसका परिणाम आज सभी के सामने है। वर्ष 2022 में खेल कोटे से ललित को बीएसएफ में नौकरी मिली। इसके बाद से वे लगातार देश और फोर्स के लिए पदक जीतते चले आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्ल्ड पुलिस गेम्स में स्वर्ण पदक जीतना बड़ी उपलब्धि है। ललित की जीत की खबर मिलते ही गांव मिताथल में जश्न का माहौल है। मुक्केबाज ललित की उपलब्धि पर ओलंपियन अर्जुन अवार्डी एवं डीएसपी दिनेश कुमार, भीम अवार्डी सुनील बॉक्सर, सरपंच प्रतिनिधि नरेश, पूर्व सरपंच जयबीर सिंह, पूर्व सरपंच सुखबीर, पूर्व सरपंच धर्मबीर, पूर्व सरपंच जयनारायण शर्मा, अशोक कोच, मास्टर जगत, सोमबीर टीटीई, मास्टर अनिल, अनुराग एलवीओ, पवन पहलवान, सतीश ढांडा इत्यादि ने बधाई दी।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छाया दिल्ली वर्ल्ड स्कूल

भिवानी। दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, भिवानी के छात्र अंश लांबा ने विद्यालय और देश का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है। उन्होंने मलेशिया में आयोजित 24वीं मिलो इंटरनेशनल ओपन कराटे चैम्पियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक प्राप्त किया। प्रतियोगिता में विभिन्न देशों के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने भाग लिया। अंश लांबा की उपलब्धि पर स्कूल में एक विशेष प्रार्थना सभा हुई। जिसमें प्रधानाचार्या डॉ. निर्मला नीतू ने उन्हें स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने अंश की मेहनत, लगन और आत्मविश्वास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे छात्र अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उन्होंने अंश के कोच व माता-पिता को भी इस सफलता का श्रेय दिया। सभा में उपस्थित विद्यार्थियों और शिक्षकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अंश का स्वागत किया। अंश ने अपनी सफलता का श्रेय अपने प्रशिक्षकों, विद्यालय और माता-पिता को देते हुए कहा कि वह भविष्य में स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम और ऊँचा करना चाहते हैं। विद्यालय के खेल अध्यापक एवं समस्त स्टाफ ने अंश को शुभकामनाएं दीं और आशा जताई कि वह आगे भी ऐसे ही उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहेंगे। यह उपलब्धि पूरे भिवानी जिले के लिए गर्व की बात है।

रिया श्योराण के गोल्ड मेडल जीतने पर खेल प्रेमियों ने बधाई दी

बाढड़ा। उतराखंड के हरिद्वार में आयोजित प्रथम नैशनल कबड्डी चैंपियनशीप में 19 वर्ष आयुवर्ग के लड़के -लड़कियों के कबड्डी के मुकाबले में हरियाणा प्रदेश की टीम के विजयी बन कर लौटने पर खेल प्रेमियों में खुशी की लहर है शनिवार को महिला खिलाड़ी रिया श्योराण का पैतृक गांव हंसावास खुर्द में पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। गांव हंसावास खुर्द में विजय श्योराण की अध्यक्षता में आयोजित अभिनंदन कार्यक्रम में सरपंच सतपाल श्योराण ने विजेता टीम की खिलाड़ी रिया श्योराण को सम्मानित किया। 28 जून से एक जुलाई तक आयोजित प्रथम नेशनल कबड्डी चैंपियनशीप में लड़कियों की स्पर्धा में हरियाणा की टीम का राजस्थान की टीम के साथ कड़ा मुकाबला हुआ जिसमें हरियाणा ने राजस्थान को चार अंकों से मात देकर गोल्ड जीता। टीम में हंसावास खुर्द की खिलाड़ी रिया श्योराण का विशेष योगदान रहा है जिस पर ग्रामीणों ने गांव की बेटी का अभिनंदन किया।

नेशनल में दिया शर्मा ने जड़ा गोल्ड पंच

भिवानी। भिवानी की एक और बेटी ने बॉक्सिंग की दुनिया में बुलंदियों के झंडे गाड़े हैं। बॉक्सर दीया शर्मा ने नेशनल चैंपियनशिप में दूसरी बार गोल्ड मेडल जीता और साथ ही बेस्ट बॉक्सर का ख़िताब जीता है। इस उपलब्धि पर दिया का भव्य स्वागत हो रहा है। बॉक्सर बेटी दिया शर्मा ने हाल ही में रोहतक में आयोजित नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप में लगातार दूसरे साल गोल्ड मेडल जीता है। यही नहीं, दिया ने लगातार दूसरी साल भी बेस्ट बॉक्सर का ख़िताब भी जीता है। यानी , दिया बीते दो सालों से नेशनल चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल व बेस्ट बॉक्सर का ख़िताब जीत रही है। दिया भिवानी में बॉक्सिंग के जनक कहे जाने वाले द्रोणाचार्य अवार्ड कैप्टन हवासिंह के बेटे बॉक्सर संजय शयोराण की एकेडमी में ट्रेनिंग लेती है। यहां पहुँचाने पर कोच व दिया के साथी बॉक्सर का ज़ोरदार स्वागत किया।

सुमित ने इंटरविवि कुश्ती में जीता रजत

भिवानी। महम गेट स्थित श्रीहरियाणा शेखावटी ब्रह्मचार्य संस्कृत महाविद्यालय के छात्र सुमित स्वामी ने रोहतक के महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय हुई प्रदेशभर के सभी महाविद्यालयों की अंतरविश्वविद्यालय फ्री स्टाइल कुश्ती प्रतियोगिता में 125 किलोग्राम भारवर्ग में दूसरा स्थान हासिल कर महाविद्यालय और जिले का नाम रोशन किया है। सुमित के शानदार प्रदर्शन से महाविद्यालय में खुशी का माहौल है। प्रतियोगिता में रजत पदक जीतने के बाद सुमित स्वामी के महाविद्यालय पहुंचने पर शनिवार को प्राचार्या सुमन शर्मा के नेतृत्व में संस्कृत प्रवक्ता सुनील शास्त्री सहित अन्य स्टाफ सदस्यों ने उनका स्वागत किया।महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापकों और छात्रों ने सुमित को फूल-मालाएं पहनाईं और उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी।

विश्व बैडमिंटन दिवसः मैत्री मैच आयोजित

चरखी दादरी । विश्व बैडमिंटन दिवस पर जिला दादरी बैडमिंटन एसोसिएशन द्वारा हीरा इंडोर स्टेडियम में मैत्री मैचों का आयोजन किया। इसके साथ ही देश की महान महिला बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु के जन्मदिन पर केक काटकर उनकी लम्बी उम्र की कामना की। इस दौरान प्रधान पंकज जैन व महासचिव लोकेश गुप्ता के नेतृत्व मैत्री मैच आयोजित किए गए। उन्होंने खिलाड़ियों के खेल की सराहना करते हुए जीवन में अधिक से अधिक आगे बढने तथा बैडमिंटन के जरिए दादरी जिले के नाम को पूरे विश्व में रोशन करने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि खेल हो या जीवन कभी हार नही माननी चाहिए।

उपायुक्त एवं बिजली बोर्ड के एससी को सौंपा ज्ञापन

भिवानी। प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में बिजली की दरों में की गई अत्यधिक वृद्धि व्यापारी वर्ग एवं आम जनता दोनों के लिए अत्यंत पीड़ादायक है। इससे न केवल व्यवसाय प्रभावित हो रहे हैं, बल्कि आमजन का घरेलू बजट भी चरमरा गया है। बिजली की दरों में चुपचाप की गई यह वृद्धि आम नागरिकों के जीवन पर सीधा प्रभाव डाल रही है। चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री भिवानी इसका पुरजोर विरोध करता है। यह बात चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, भिवानी के प्रधान डॉ. पवन बुवानीवाला ने उद्योगपतियों से विचार विमर्श करने के पश्चात जिला उपायुक्त एवं बिजली बोर्ड के एस सी को ज्ञापन सौंपते हुए कही। उन्होंने कहा कि बिजली बिलों में फिक्स्ड चार्ज की वजह से उपभोक्ताओं पर अधिक बोझ पड़ा है। यहां तक कि कामर्शियल उपभोक्ता को भी एलटी एंड एचटी आपूर्ति शुल्क के साथ मिलाकर भी झटका दिया है।

शतरंज मात्र खेल नहीं, बच्चों को एकाग्रता अनुशासन में रहने का देता संदेशः शिक्षामंत्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

शिक्षा मंत्री का स्वागत करते शिक्षा विभाग के अतिरिक्त निदेशक सुनील बजाज।

हाल ही में 15 जून से 21 जून तक गुरुग्राम में संपन्न हुई 38वीं लड़के और लड़कियों की अंडर 9 आयु वर्ग की राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में शिक्षा विभाग में कार्यरत अतिरिक्त निदेशक सुनील बजाज बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। दी हरियाणा चैस एसोसिएशन की तरफ से शतरंज को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल कराने का आग्रह किया। प्रदेश के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा जी ने शतरंज को बढ़ावा देने के लिए अपनी सहमति दी। इसी कड़ी में शनिवार को समस्त हरियाणा के सरकारी स्कूलों में शतरंज दिवस मनाया गया। पानीपत में गवर्नमेंट मिडिल स्कूल कछरोली में भी जिला चैस एसोसिएशन पानीपत के सहयोग से शतरंज का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे शिक्षा मंत्री बतौर मुख्य अतिथि शामिल होकर शतरंज को बढ़ावा देने के अपने इरादे स्पष्ट कर दिए।

मार्केट न्यूज

एमके हॉस्पिटल, भिवानी में हुआ मेगा हेल्थ कैंप का सफल आयोजन

भिवानी। एमके हॉस्पिटल, भिवानी द्वारा दिनांक 5 जुलाई 2025 को एक मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें 300 से अधिक मरीजों ने भाग लिया और निःशुल्क जाँच करवाकर विशेषज्ञ डॉक्टरों से परामर्श प्राप्त किया। इस मेगा हेल्थ कैंप में यूरोलॉजी, गैस्ट्रो सर्जरी , स्त्री एवं प्रसूति रोग, न्यूरोलॉजी, जनरल मेडिसिन , हड्डी व जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ, दंत रोग चिकित्सक, नेत्र रोग, क्रिटिकल केयर, क्लीनिकल साइकोलॉजी ,कान नाक गला (ईएनटी), कैंसर रोग विशेषज्ञ आदि उपस्थित रहे । सभी विशेषज्ञों ने रोगियों की स्थिति के अनुसार सही और समयबद्ध चिकित्सा परामर्श प्रदान किया। इस शिविर के माध्यम से भिवानी के नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान मिला। शिविर में मरीजों को उनकी बीमारियों के संबंध में सटीक जानकारी, उपचार संबंधी सलाह और जरूरी परीक्षण प्रदान किए गए। इस स्वास्थ्य शिविर में निःशुल्क खून की जाँच, ब्लड शुगर, एक्स रे ,ब्लड यूरिया व अन्य आवश्यक जाँच फ्री में की गईं। एमके हॉस्पिटल द्वारा भविष्य में भी इस प्रकार के जनहितकारी स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन जारी रहेगा, ताकि हर व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें।

मंत्री रणबीर गंगवा ने अधिकारियों के साथ लिया समारोह स्थल का जायजा

मेला ग्राउंड नहीं अब भीम स्टेडियम में होगा दक्ष जयंती कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। जयंती समारोह स्थल का निरीक्षण करते मंत्री रणबीर गंगवा।

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी तथा लोक निर्माण मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि भिवानी में 13 जुलाई को आयोजित होने वाले महाराज श्री दक्ष प्रजापति जयंती समारोह ऐतिहासिक होगा। जयंती समोराह को लेकर लोगों में भारी उत्साह बना हुआ है। प्रदेशभर से भारी संख्या में लोग जयंती समारोह में शामिल होंगे। श्री गंगवा शनिवार को भिवानी में श्री दक्ष प्रजापति जयंती समारोह की तैयारियों का जायजा ले रहे थे। लोक निर्माण विश्राम गृह में पहुंचने पर डीसी साहिल गुप्ता, पुलिस अधीक्षक मनबीर सिंह और पार्टी जिलाध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने कैबिनेट मंत्री का स्वागत किया। उन्होंने जिलाधिकारियों के साथ जयंती समारोह के आयोजन स्थल को लेकर विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि बारिश की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। इस पर जिला प्रशासन द्वारा भीम स्टेडियम में समारोह आयोजित करने बारे सुझाव दिया गया।

गंगवा ने अधिकारियों के साथ भीम स्टेडियम का निरीक्षण किया और यहीं पर समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया।भीम खेल परिसर में पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और मीडिया कर्मियों से बातचीत करते हुए कैबिनेट मंत्री श्री गंगवा ने कहा कि जयंती समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि होंगे। इसके अलावा अन्य कैबिनेट मंत्री, सांसदगण, विधायक और पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि जयंती समारोह को लेकर लोगों में उत्साह बना हुआ है। लोग ढोल और गाजे-बाजे के साथ जयंती समारोह में पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार अंत्योदय की भावना के साथ कार्य कर रही है। सरकार बिना मांगे गरीब और वंचित वर्ग को उनका हक दे रही है।

उन्होंने कहा कि सरकार हर वर्ग के लिए कल्याणकारी नीतियां लागू कर रही है। सरकार बिना भेदभाव के समान रूप से विकास कार्य करवा रही है। श्री गंगवा ने कहा कि पारदर्शिता के साथ युवाओं को नौकरी प्रदान की जा रही हैं।

अधिकारियों को दिए सीवरेज समस्या दूर

कैबिनेट मंत्री गंगवा ने जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी और लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शहर में सीवरेज जाम की समस्या नहीं बननी चाहिए। जहां भी सीवरेज जाम हैं, उनको ट्रैक्टर लगाकर तुरंत प्रभाव से खुलवाया जाए। इसी प्रकार से पेयजल लाईनों की लीकेज को दुरुस्त किया जाए, ताकि लोगों को पीने के लिए स्वच्छ पेयजल मिले। इसके साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सड़कों पर गड्ढों की वजह से कोई हादसा न हो, इसके लिए जहां भी गड्ढा नजर आते हैं या आमजन कोई शिकायत करता है, उनको अतिशीघ्र भरा जाए।

बीके स्कूल में डिक्लामेशन प्रतियोगिता का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के बी के. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के लिए अंतर्सदनीय अंग्रेजी डिक्लामेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा छठी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। यह प्रतियोगिता दो वर्गों कनिष्ठ वर्ग कक्षा छठी से कक्षा आठवीं तथा वरिष्ठ वर्ग कक्षा नौवीं से बारहवीं में आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने सकारात्मक चिंतन की शक्ति, पढ़ने की आदत को छोड़ने के नुकसान, विद्यार्थियों में बढ़ता फैशन जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। निर्णायक मंडल की भूमिका मोहित एवं शिखा ने निभाई। मंच का कुशलतापूर्वक संचालन कक्षा सातवीं की छात्रा खनक एवं सिल्की के द्वारा किया गया। कनिष्ठ वर्ग से तक्षशिला सदन से कक्षा आठवीं से छात्रा काशवी ने प्रथम, नालंदा सदन से कक्षा छठी की छात्रा हेरल ने द्वितीय, इंद्रप्रस्थ सदन से आठवीं की छात्रा प्राची ने तृतीय स्थान प्राप्त किया

हरिभूमि रविवार भारती

haribhoomi.com

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

रोहतक, रविवार 6 जुलाई 2025

विशेषः विश्व जनसंख्या दिवस
11 जुलाई

पिछले दो-तीन दशकों में शहरी जनसंख्या के अनियंत्रित रूप से बढ़ने की वजह से लोगों का जीवन समस्याओं से घिरता जा रहा है। इससे साफ हवा-पानी की कमी, ट्रैफिक जाम, रहने के लिए असुविधाजनक आवास समेत कई तरह की परेशानियों के साथ लोग जीने के लिए बाध्य हैं। आने वाले वर्षों में उत्पन्न होने वाले गंभीर संकटों से बचने के लिए इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

जीवन कठिन बना रही शहरों की बढ़ती जनसंख्या

कवर स्टोरी/शैलेंद्र सिंह

भारत में तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने लोगों के लिए आर्थिक अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इससे लोगों के जीवन की गुणवत्ता में बहुत गिरावट आई है। यानी बढ़ते शहरीकरण ने शहरों में रहने वाले लोगों के जीवन को बहुत तकलीफदेह बना दिया है। ये पूरी दुनिया की समस्या नहीं बल्कि भारत और कुछ अन्य विकासशील देशों की ही है, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप में बांग्लादेश और पाकिस्तान भी शामिल हैं।

शहरों में नागरिक सुविधाओं की कमी

आजादी के बाद देश में तेजी से शहरीकरण बढ़ा और इस दौरान शहर, देश के आर्थिक अवसरों का केंद्र बन कर भी उभरे। लेकिन भारत में शहरों की तरफ गांवों से बहुत तेज पलायन हुआ, जिससे शहरों में जीवन जीने की स्थितियों को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। नागरिक सुविधाओं का देश के लगभग हर शहर में अभाव है। आज देश का शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जो पूरी तरह साफ-सुथरा, खुला-खुला और नागरिक सुविधाओं से भरपूर हो। हर शहर में कुछ इलाके तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन सभी शहरों के ज्यादातर हिस्से सुविधाओं की नजर से समस्याओं से ग्रस्त दिखते हैं। चाहे मुंबई हो, दिल्ली हो, बेंगलुरु हो या हैदराबाद। देश और दुनिया के ये बड़े-बड़े शहर आज बड़ी-बड़ी उपलब्धियों के गढ़ तो हैं, लेकिन इन बड़े शहरों में बहुसंख्यक लोग भीषण परेशानियों के बीच रह रहे हैं।

अनियोजित शहरीकरण

अपने देश में 80 के दशक के बाद से इतना तेज शहरीकरण हो रहा है कि देश का कोई भी शहर अपनी बढ़ने वाली जनसंख्या को ध्यान में रखकर नगर नियोजन का काम नहीं कर पा रहा है। हर शहर अगले 10 सालों तक जितनी

जनसंख्या का अनुमान लगाकर नियोजन करता है, जनसंख्या हमेशा उससे दो से तीन गुना बढ़ जाती है। यही कारण है कि भारत के सभी बड़े शहर अनियोजित शहरीकरण की समस्या से जूझ रहे हैं। यहां तक कि कानपुर, लुधियाना, भोपाल, अमृतसर, कोल्हापुर और राजकोट जैसे मझौले शहर भी जनसंख्या के दबाव से इस कदर अव्यवस्थित हो गए हैं कि इनकी आधारभूत संरचना के मुकाबले कई गुना ज्यादा इन पर जनसंख्या का दबाव है। दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगर लाख प्रयासों के बावजूद पिछले कई दशकों में अपने शहर की झुग्गी बस्तियां नहीं खत्म कर सके और न ही इन झुग्गी बस्तियों को साफ पानी, सीवर या बिजली की सुविधा दे सके हैं।

बढ़ते ट्रैफिक में फंसे शहर

आवास और बिजली, पानी की समस्या तो शहरों में है ही, लगभग सभी शहर आज सबसे बड़ी जिस समस्या से जूझ रहे हैं, वह है-सड़कों पर वाहनों की बेतहाशा वृद्धि। अंधाधुंध बढ़े वाहनों के कारण बेंगलुरु और मुंबई जैसे शहर तो थम से गए हैं। बेंगलुरु में पीक आवर्स में सड़कों पर यातायात बिल्कुल रेंगता है। 10 किलोमीटर की दूरी अकसर लोग कार से डेढ़ से दो घंटे में तय कर पाते हैं। यहां की सड़कें बिल्कुल चोकड हो गई हैं, उन पर क्षमता से 300 फीसदी से ज्यादा वाहन दौड़ रहे हैं। इसीलिए आज वहां की सबसे बड़ी समस्या ट्रैफिक की है। इससे भी खराब दशा मुंबई की है। मुंबई में पीक आवर्स में सड़क यातायात की रफ्तार 5 से 10 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। कमोबेश सभी शहरों का यही हाल है। यही वजह है कि आज हर एक घंटे में भारत के सिर्फ शहरों में 150 से लेकर 180 लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं।

नागरिक सुविधाओं का अभाव

देश में बड़े शहर तेजी से फैल रहे हैं, जहां स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, कचरा प्रबंधन, सीवर और सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं हर किसी के लिए नहीं हैं। सिर्फ कुछ लोगों के लिए ही हैं। शहरों की कुछ कालोनियों में ही नियमित रूप से साफ पानी आता है, सड़कें सपाट और चौड़ी हैं, स्कूल, अस्पताल आदि की सुविधाएं हैं। जबकि शहरों के बड़े हिस्से इन सुविधाओं से वंचित हैं। यही कारण है कि नागरिक सुविधाओं के नजरिए से देश के बड़े शहरों में पर्यावरणीय संकट भी विकट है। पिछले दो दशकों में लाखों की तादाद में पेड़ काटे गए हैं। बस्तियों के बीच मौजूद तालाब, नाले आदि सब पाट दिए गए हैं। शहरों के बीच से बहने वाली नदियों को सीवर में तब्दील कर दिया गया है। यही कारण है कि देश के बड़े शहर, वायु प्रदूषण, जल भराव, हीट वेव और घटते भू-जल स्तर की समस्याओं से दो चार हैं।

जीवन की गुणवत्ता में गिरावट और तनाव

देश के शहरों में आम लोगों का जीवन जिंदगी की गुणवत्ता से जंग कर रहा है। बहुसंख्यक शहरी लोगों के जीवन में मजबूत सामाजिक संबंध नहीं रहे। समय और जगह की कमी है। मानसिक बीमारियों का रेला है और खालीपन व असुरक्षा का लगातार घेरा बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण लोगों के आम जीवन में जबर्दस्त सामाजिक तनाव और असमानता व्याप्त है। कुल मिलाकर भारत में पिछले चार दशकों में जनसंख्या का जो तेज शहरीकरण हुआ है, उसके कारण हमारे शहरों की व्यवस्था को बनाए रखना बड़ी चुनौती बन गया है। *

कोठरियों में रहते लोग

यूं तो हर शहर में कुछ चमचमाती हुई इमारतें होती हैं, कुछ बड़े-बड़े बंगले होते हैं। लेकिन शहरों का 70 से 75 फीसदी हिस्सा घरों का नहीं, कोठरियों या छोटे-छोटे दड़बों का जंगल बन गया है। मध्यम और निम्न वर्ग के लिए सस्ते घरों में गरिमामय आवास की कल्पना नहीं की जा सकती। मुंबई में तो 250 से 300 फीट के एक कमरे वाले फ्लैट लेना भी सपने जैसा हो चुका है, क्योंकि ये छोटे-छोटे दड़बे भी 40 से 50 लाख रुपए के मिलते हैं। भारत के लगभग सभी शहरों में प्राइवेट बिल्डर फ्लैट्स और कॉलोनियों की भरमार है, जहां रहने के लिए आवास को गरिमामय बनाने का कोई मापदंड नहीं है। यहां झुग्गियां, किराए के लिए मकान और अनधिकृत कॉलोनियों की अंतहीन रेंज हैं। दिल्ली में 80 से 90 लाख लोग अनधिकृत कॉलोनियों में और 30 से 35 लाख लोग झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। जहां लोगों को न तो भावनात्मक सुरक्षा है और न ही मनोवैज्ञानिक निजता।

बदलाव / नरेंद्र शर्मा

इसमें संदेह नहीं कि आज के दौर में लगभग हर क्षेत्र में एआई की घुसपैठ बढ़ रही है। साहित्य, संगीत और कला में भी इसकी एंट्री हो चुकी है। लेकिन लाख कोशिश के बाद भी इससे निर्मित आर्ट प्रोडक्ट, हमारे मन को स्पर्श नहीं कर पाता है।

मन को नहीं छू पाता एआई का आर्ट प्रोडक्ट

आज पूरी दुनिया में इस आशंका का सवाल गहराता जा रहा है कि क्या एआई, कला से उसकी स्वाभाविक कल्पनाशीलता, मौलिकता और कलात्मकता छीन रही है? दरअसल, कला का मूल स्वभाव सृजन है। ऐसा सृजन, जो व्यक्ति की भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं से उपजता है। चित्रकला, संगीत, साहित्य, मूर्तिकला या रंगमंच। ये सभी विद्याएं मानवीय कल्पना शक्ति का विस्तार हैं। विविध रूपीय विस्तार। लेकिन अब एआई द्वारा कुछ ही सेकेंड में चित्र बनाए जा रहे हैं, कहानियां लिखी जा रही हैं, संगीत रचा जा रहा है, तो क्या ये सारी एआई से पैदा होने वाली कलाएं उस मानवीय कल्पनाशीलता की बराबरी करती हैं? यह सवाल इसलिए भी जरूरी है कि अगर वास्तव में ऐसा होता है तो लगता है कि आजतक के मानव विकास क्रम को मशीन यानी एआई ने एक झटके में अर्थहीन कर दिया है। लेकिन यह सोचना सही नहीं है।

भावनाहीन होते हैं एआई प्रोडक्टः एआई टूल हजारों पुराने चित्रों के डेटा के आधार पर नई पेंटिंग क्षणभर में बना दे रहे हैं। आप अगर इन एआई टूल्स से कहते हैं कि एक महिला जो समुद्र की लहरों से बनी है और जिसकी आंखों में तारे झिलमिला रहे हैं, ऐसी पेंटिंग बनाओ तो ये टूल्स एक क्षण में यह पेंटिंग्स बना करके हाजिर कर देंगे। लेकिन क्या ये पेंटिंग्स उस कलाकार की पेंटिंग जैसी होगी, जो समुद्र किनारे अपना पेंटिंग स्टैंड लगाए घंटों लहरों से आंखमिचौली करते हुए अपनी कल्पना में रंग भरता है। जी नहीं, बिल्कुल नहीं होगी। इस कलाकार की पेंटिंग्स में जो कलाकृति उभर कर आएगी, वह भावनाओं से संवाद करेगी। एआई की कल्पना ऐसा नहीं कर सकती। कलाकार की बनाई गई पेंटिंग संभावनाओं का आंकड़ा नहीं होगी, क्योंकि वह पहले से दुनिया में मौजूद किसी पेंटिंग की प्रतिकृति नहीं गढ़ रहा होगा, उसके मन में एक नई ही छवि मूर्तवत हो रही होगी, जो पहले नहीं होगी। जिसकी आंखों में कलाकार की भावनाएं, संवेदनाएं सब कुछ बोल रही होंगी। लेकिन एआई को यह सब नहीं करना। उसे अपने डाटा स्टोर में मौजूद आंकड़ों के मेल से एक नई फोटो कॉपी भर गढ़नी है। फर्क सिर्फ इतना होगा कि एआई किसी एक कलाकृति की बजाय बहुत सी कलाकृतियों को आपस में मिक्स करके उनसे एक नई कलाकृति निर्मित करने का भ्रम भर रचेगा। इसलिए कहा जा सकता है कि एआई कला का पुनरोत्पादन तो कर सकता है पर कला सृजन नहीं कर सकता। इसलिए एआई कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता नहीं छीन सकता।

अनुभूति को नहीं दे सकता शब्दः अब जीपीटी मॉडल हिंदी और अंग्रेजी में आदेश पर कविताएं लिख रहे हैं। मसलन, आप उनसे कहें एक प्रेम कविता लिखो, जिसमें बारिश भी हो, मन का उल्लास भी हो, तारे सितारे छूने की कल्पनाशीलता भी हो, तो वह शब्दों के उस ढांचे में जिसे कविता कहना कहीं से उचित नहीं होगा, में डाल तो देगा, लेकिन वे शब्द कभी दिल को नहीं छुएंगे। यह एक किस्म की मशीनी शब्द उत्पाद होगा। ऐसी कविता न कवि को खुशी देगी और न ही कविता सुनने वालों को कहीं से प्रेरित कर सकेगी। अगर यही प्रेम कविताएं होंगी, तो फिर कविता का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। इसलिए एआई कुछ भले कर लें या चाहे करता दिखे, लेकिन वह न तो इंसानी भावनाओं की नकल कर सकता है और न ही इंसानी अनुभूति को शब्द या कैनवास में उतार सकता है। एआई के लिए बारिश एक गतिविधि भर है और किसी कवि या कलाकार के लिए बारिश एक समूचा जीवन है, जीवन धड़कन है और उसकी एक-एक बूंद पर उसकी लाखों अनुभूतियों का बसेरा हो सकता है। कवि या कलाकार की रचना केवल शब्दों या रंगों का संगठन भर नहीं होगा, वो अनुभूति की एक जीवंत दुनिया होगी। इसलिए एआई कितनी भी तेज रफ्तारी से कला की प्रतिकृतियां रचने में चौंका रहा हो, पर कभी दिल और दिमाग को झंकृत नहीं कर पाएगी।

बनी रहेगी कला की जीवंतताः एआई के बारे में यही बात संगीत रचना, थिएटर और अभिनय आदि पर भी लागू होती है। एआई का कोई टूल किसी रंगमंच के अभिनेता की जगह नहीं ले सकता। एआई की सजगता, उसकी मशीनी चातुरी कभी किसी नाटक की स्क्रिप्ट की जगह नहीं ले सकती। एआई कला से या कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता या जीवंतता की अनुभूति कभी नहीं छीन सकती। *

जीवनशैली

भूपेंद्र भारतीय

सही नहीं हर बात पर साधे रहना चुप्पी

जिस तरह बेवजह और जरूरत से ज्यादा बोलना सही नहीं होता, उसी तरह जरूरत के समय ना बोलना या हमेशा चुप्पी साधे रहना भी नुकसानदेह होता है। इस मामले में सोच-समझकर एक संतुलन की जरूरत होती है।

मानव जीवन की सबसे सुंदर विशेषता है, उसे ईश्वर द्वारा मिली अभिव्यक्ति की शक्ति। अभिव्यक्ति को एक शक्ति ही माना जाना चाहिए, जो इस ब्रह्मांड में सिर्फ मानव को पूर्ण रूप में मिली है। लेकिन क्या हम अभिव्यक्ति की इस शक्ति का सही उपयोग कर पाते हैं? यह प्रश्न हमें स्वयं से पूछना चाहिए।

हो सकती हैं कई समस्याएंः सामान्य तौर पर अपनी बात कहना या फिर कुछ बोलना ही अभिव्यक्ति करना कहा जाता है। वहीं कुछ नहीं बोलना मतलब चुप रहना। हालांकि किसी मामले में चुप रहना भी अभिव्यक्ति का ही एक रूप माना जाता है, लेकिन जब जरूरत हो तब अपनी बात, विचार व्यक्त न करना, कई पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं को जन्म दे सकता है। यही नहीं हमेशा चुप्पी साधे रखना मानसिक रोग की भी वजह बन सकती है। हर इंसान के जीवन में ऐसे अवसर अकसर आते रहते हैं, जब उसे चुप रहना पड़ता है। लेकिन क्या हमेशा चुप रहना, उसके आस-पास के परिवेश के लिए उचित होता है? यह प्रश्न ही यहां सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण है, जो चुप्पियों को जन्म देता है। ऐसी चुप्पियां हमें भारी नुकसान पहुंचाती हैं। हमें अंदर से धीरे-धीरे तोड़ती जाती हैं। हमें पल-पल कमजोर करती रहती हैं। सच्चाई यह है कि जरूरत से ज्यादा चुप्पियां, हमें प्रतिपल दीमक की तरह खोखला करती रहती हैं।

हमेशा ना रहें खामोशः प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का प्रसिद्ध कथन है, 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?' यह कथन उचित समय पर चुप्पियों को तोड़ने का बल देता है,

वहीं यह संदेश भी देता है कि सही बात को बोलना ही चाहिए। भले ही छोटा-मोटा बिगाड़ हो जाए। लाख कोशिशों के बाद भी, एक न एक दिन कितनी भी बड़ी चुप्पी हो उसे तोड़ना ही पड़ता है, नहीं तो वह चुप्पी आपको तोड़ देगी।

हो सकते हैं महाविनाशः चुप्पी के कारण महाभारत जैसे युद्ध तक हो सकते हैं। दुर्योधन और दुःशासन के अनाचार के समय अगर भीष्म, द्रोणाचार्य और धृतराष्ट्र समेत दरबार में उपस्थित अन्य लोगों ने चुप्पी तोड़ दी होती, अनाचार को रोकने के लिए आवाज उठाई होती तो महाभारत कभी नहीं होता। इसी तरह धर्मराज युधिष्ठिर ने अपनी माता कुंती को महाभारत युद्ध के बाद कहा था, 'माता, कर्ण से जुड़ा सत्य आपने छुपाकर बहुत बड़ी गलती कर दी।'

चुप्पी साधने के कारणः चुप्पी साधने के अनेक कारण हो सकते हैं। हम डरते हैं कि हमारे बोलने से कोई नुकसान ना हो जाए। वह फिर मानव संबंधों का मामला हो या फिर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि से जुड़े मामले हों। हमारे सत्य बोलने से किसी को बुरा लग सकता है और हम अपने संबंधों को बिगाड़ना नहीं चाहते, किसी को नाराज नहीं करना चाहते। वास्तव में सत्य डरावना या फिर बुरा नहीं होता है। लेकिन हम सत्य की सुंदरता देख नहीं पाते। इसी सत्य की शक्ति के स्वरूप हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखते हैं, 'सत्य के लिए, किसी से भी न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।' यह डर ही हमको बहुत सी बातें ना कहने के लिए विवश करता है कि चुप रहो। यह चुप रहना ही धीरे-धीरे चुप्पियों का बड़ा रूप ले लेता है और हमारे अंदर डर का एक मकड़जाल बन जाता है। हम यथार्थ से भागने लगते हैं।

बढ़ रही हैं जीवन में चुप्पियांः वर्तमान दौर में मोबाइल और इंटरनेट जैसी तकनीकी ने भी हमें चुप्पी और संवादहीनता की ओर बढ़ाया है। परिवार में हर कोई इन्हीं में व्यस्त रहता है। जहां संवाद नहीं वहां जीवन और समाज आगे नहीं बढ़ सकता है। प्रसिद्ध संत तरुण सागर कहते हैं, 'समाज, परिवार और आपसी संबंधों से कभी संवाद बंद मत करो। जिस दिन आपने संबंधों में बोलना बंद किया, उस दिन से आपके संबंध धीरे-धीरे टूटना शुरू हो जाएंगे। इसलिए बोलना कभी बंद मत करना।' *

गजल

वसीम अहमद

करार आने लगा है

जो कुछ-कुछ एतबार आने लगा है
तो इस दिल को करार आने लगा है
जैसे-जैसे है उनसे अपनत्व जागा
मुसलसल उनपे प्यार आने लगा है
कि जब से घर में दर्पण आ गया है
उन्हें करना सिंगार आने लगा है
परस्पर दिल्लगी जब से बढ़ी है
तो रिश्तों में सुधार आने लगा है
तू जब से उनको अपना मान बैठा
मेरे दिल को करार आने लगा है।
निगाहों को निगाहें पढ़ रही हैं
मुसलसल एतबार आने लगा है

व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो।

निलंबन में मजा है

वह सरकारी काम, काम नहीं होता, जो लंबित न रहे और वह सरकारी अफसर, अफसर नहीं, जो नौकरी में एक-दो बार निलंबित न रहे। सस्पेंड होना बुरा नहीं है। बुरा होता है, निलंबित होकर फटाफट बहाल हो जाना। निलंबित हुए बिना महंगाई भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता आदि बहुत सारे भत्ते मिल सकते हैं, मगर निलंबन भत्ता नसीब नहीं हो सकता।

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो। मेरे एक डॉक्टर मित्र हैं। अपने सीनियर अफसर से जान-बूझकर पंगा ले बैठे। सस्पेंड हो गए। अब शान से प्राइवेट प्रैक्टिस झाड़ रहे हैं। विभाग ने हर मुमकिन कोशिश की कि वह बहाल हो जाएं, वह खुद ही मुकर गए। सस्पेंशन रस का स्वाद उनके मुंह लग चुका है।

वह जानते हैं, सरकार दयालु है। एक-न-एक दिन पाई-पाई जोड़कर बुढ़ापे के वक्त उनकी चारपाई पर धर जाएगी। अब वह अपने उसी सस्पेंडक सीनियर अफसर को मासिक रूप से बंधी रकम पहुंचाते हैं। इसलिए नहीं कि बहाल हो जाएं, बल्कि इसलिए कि निलंबन बरकरार रहे। इस भांति दोनों सुखी और संपन्न हैं। डॉक्टर साहब की प्राइवेट प्रैक्टिस चल रही है, बड़े साहब की पब्लिक प्रैक्टिस। पारस्परिक सद्भावना सुदृढ़ है। जनसेवा और राजसेवा साथ-साथ चलायमान हैं।

मेरे एक और मित्र बड़े अफसर हैं। ऊंची पकड़ के चलते बरसों से एक ही जिले में अटके हुए हैं। उनके पास तरह-तरह के तिकड़मी डंडे हैं। पर वह पूरे जिले को एक ही डंडे से हांकते हैं। स्वभाव से मृदु हैं। अंदाज दोस्ताना है। मैं अकसर वार्तालाप की तलब उठने पर अपनी शामें जाया करने उनके सरकारी अजायब खाने पर पहुंच जाया करता हूं।

उस रोज गया, तो उनका चपरासी चौंकता हुआ बोला, 'अरे, आपको नहीं मालूम, अपने साहब तो हसबैंड होइ गए!'

अब चौंकने की बारी मेरी थी। मैं जानता था, साहब कुंआरे हैं। न सगाई, न न्यौता, न दावत!

यह साहब हसबैंड कब हो गए? दिमाग पर जोर डाला, तो समझ में आया कि यह साहब हसबैंड नहीं, सस्पेंड हो गए हैं। और सच भी यही है, हसबैंड ओर सस्पेंड होने में कोई खास फर्क नहीं होता। ये दोनों ही हो जाने के बाद आमदनी का एक हिस्सा किसी और की भेंट हो जाया करता है। तब कमाई के नए जरिए तलाशने ही पड़ जाते हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी लघुकथाएं

अलका 'सोनी' की लघुकथाएं और कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। सरल-सहज लहजे में वे जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं को अपने लेखन में व्यक्त करती हैं। हाल में छपकर आए उनके लघुकथा संग्रह 'हवा में बनती हैं नई जगहें' की लघुकथाओं में भी इसकी बानगी देखी जा सकती है। 'टूटा तारा' लघुकथा के जरिए लेखिका ने शहरी जीवनशैली की विडंबनाओं और उसके फलस्वरूप नई पीढ़ी की प्रकृति से बढ़ती दूरी को मार्मिक तरीके से उभारा है। इसी तरह 'जिंदगी का डिस्काउंट' लघुकथा में भी आधुनिक जीवनशैली में बिसरती जा रही खुशी और अपनेपन की परिभाषा पर प्रभावी तरीके से कटाक्ष किया गया है। 'पापा का कोना' लघुकथा भी बहुत हौले से हमारी निर्जीव होती जा रही संवेदना को स्पर्श करती है। इसमें नई पीढ़ी फादर्स डे मनाने के लिए इस कदर उत्साहित होती है कि उसे पुरानी पीढ़ी के अपने पिता ही सेलिब्रेशन में मिसफिट लगने लगते हैं और उनको किसी कोने में बैठने को कह दिया जाता है। कहने की जरूरत नहीं कि ये लघुकथाएं, हमें हमारे समय का प्रतिबिंब, बगैर किसी लाग-लपेट के दिखाने में सक्षम हैं। *

पुस्तकः हवा में बनती हैं नई जगहें (लघुकथा संग्रह), **लेखिकाः** अलका सोनी, **मूल्यः** 150 रुपए, **प्रकाशकः** मेधा बुक्स, दिल्ली

प्राचीन-अनूठी बादामी गुफाएं

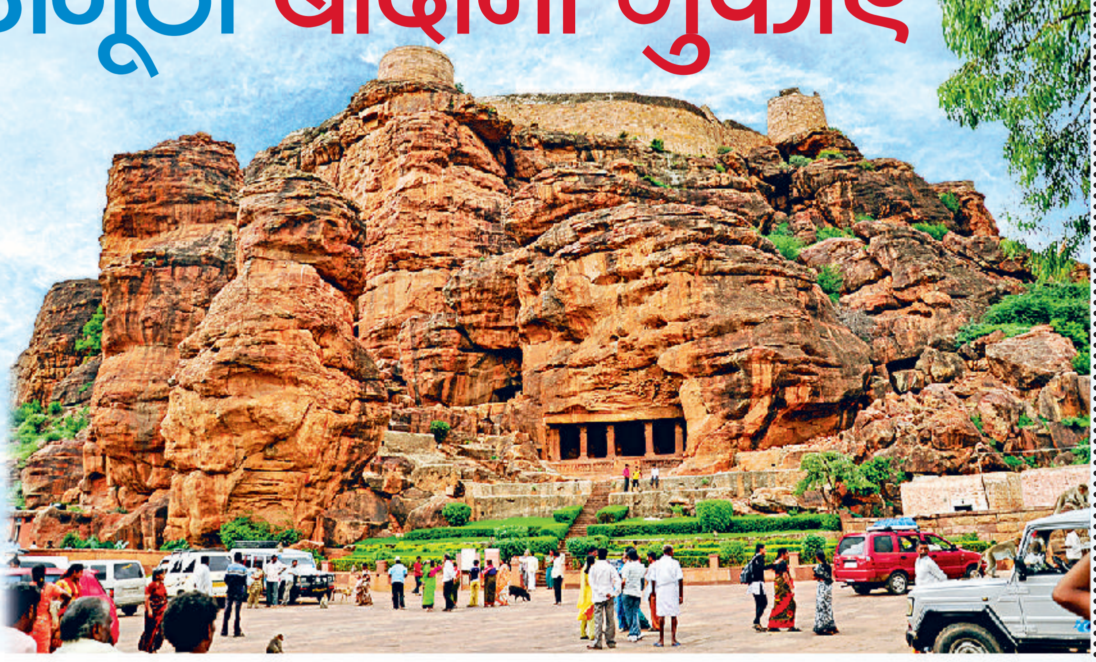

कर्नाटक राज्य के उत्तरी भाग के बागलकोट जिले में ऐतिहासिक बादामी नगर में स्थित हैं बादामी गुफाएं और मंदिर। इन गुफाओं का न केवल पौराणिक बल्कि ऐतिहासिक महत्व भी है। इन गुफाओं में मौजूद प्रतिमाएं चालुक्य वंश की शिल्पकला का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जो इतिहासप्रेमी पर्यटकों को मोहित कर लेती हैं।

दर्शनीय स्थल

जगत नारायण भारद्वाज

अगर आप इतिहासप्रेमी पर्यटक हैं तो आपको एक बार कर्नाटक के बादामी नगर में स्थित प्राचीन गुफाओं और मंदिरों को जरूर देखना चाहिए। इन गुफा-मंदिरों में मौजूद प्रतिमाएं, छठी-सातवीं सदी में यहां शासन करने वाले चालुक्य शासकों के दौर की उत्कृष्ट शिल्प कला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार कर्नाटक का बादामी नगर, महाभारतकालीन असुर राजा वातापी की राजधानी हुआ करती थी। पौराणिक काल के विंध्याचल पर्वत के दक्षिण में स्थित इस दंडकवन में अगस्त्य ऋषि और लोपामुद्रा वास किया करते थे। यहीं पर वातापी और इलविल दो भाई अपनी संजीवनी विद्या का दुरुपयोग करके ऋषि-मुनियों को तंग करते और कई बार उन्हें मार भी देते थे। एक बार अंजाने में इन दोनों भाइयों ने अगस्त्य ऋषि पर भी आघात करना चाहा। इस पर अगस्त्य ऋषि ने अपने तपोबल से वातापी को उदरस्थ कर नष्ट कर दिया और दंडक वन को उनके अत्याचारों से मुक्त कर दिया। तभी से इसे अगस्त्य तीर्थ भी कहा जाने लगा।

ऐतिहासिक महत्ता: सन 547-757 तक बादामी नगर, चालुक्यवंशी राजाओं की राजधानी रही है। यहां के पराक्रमी सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने ही उत्तर भारत के सम्राट हर्षवर्धन को पराजित किया था। इसी सम्राट पुलकेशिन के पुत्रों मंगलेश और कीर्तिवर्मन ने यहां के पर्वतों को काटकर गुफा और मंदिरों का निर्माण कराया था। वही प्राचीन गुफाएं और मंदिर, बादामी गुफाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मौजूद हैं प्राचीन प्रतिमाएं: यहां प्रमुख रूप से चार गुफाएं हैं। इन 4 गुफाओं में पहली गुफा हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित है, जिसे नटराज गुफा कहा जाता है। इसमें अर्धनारीश्वर, हरिहर रूप और 18 भुजाओं वाली नटराज की प्रतिमा है, जो देश में अन्यत्र नहीं है। नटराज की मूल प्रतिमा, जो तमिलनाडु के चिदंबरम में है, में भी 16 हाथ हैं। इस गुफा में एक मूर्ति ऐसी भी है, जिसे एक ओर से ढंकने पर हाथी और एक ओर से ढंकने पर नंदी की प्रतिमा दिखाई देती है। इन गुफाओं की एक विशेषता यह भी है कि यहां पर प्रतिमाओं के साथ ही शिल्पकारों के नामों को भी उकेरकर उन्हें अमर कर दिया गया है।

एक अन्य गुफा भगवान विष्णु को समर्पित है। इस गुफा में भूदेवी के साथ वराह और वामन अवतार की विशाल प्रतिमाएं बनी हैं। समुद्रमंथन, कृष्णलीला और अन्य पौराणिक आख्यानों के दृश्य भी बहुत सुंदरता से इस गुफा में उकेरे गए हैं। गुफाओं के विशाल स्तंभों पर सुंदर और महीन कलात्मक कारीगरी की गई है। ये कलाकारी इतनी मोहक है कि जिन्हें स्थानीय साड़ियों के निर्माता भी ऐसी डिजाइन की साड़ियां बनवाते हैं। गुफा की ऊपरी छत पर ऐसे स्वास्तिक बने हैं, जिनका प्रारंभ और अंत का भी आभास नहीं होता है। आपने शेषनाग पर शयन करते भगवान विष्णु की प्रतिमा तो देखी होगी लेकिन शेषनाग पर विराजित भगवान विष्णु की प्रतिमा आप यहीं पर देख पाएंगे। यहां 578 ईसवी में निर्मित कन्नड़ लिपि में लिखा गया एक शिलालेख भी है। इसमें मंगलेश द्वारा एक गांव को दान में दिए जाने का उल्लेख है। तीसरी गुफा भी भगवान शिव को समर्पित की गई है। जबकि चौथी गुफा में जैन तीर्थंकरों की विशाल मूर्तियां बनी हैं। इसमें भगवान वर्धमान, महावीर, पार्श्वनाथ तथा बाहुबली की सुंदर प्रतिमाएं सुशोभित हैं।

कुछ ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि चालुक्य वंश के शासकों ने पहले शैव, वैष्णव और फिर जैन पंथ को अपनाया। इसीलिए इन गुफाओं में इनकी प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। यह प्राचीन काल में धार्मिक समन्वय का सशक्त उदाहरण है। शाम के समय में इन गुफाओं की शोभा देखते ही बनती है। इन गुफाओं के कारण ही बादामी नगर विश्व में प्रसिद्ध हुई है। यह स्थल पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

अन्य दर्शनीय स्थल: इन बादामी गुफाओं के नीचे अगस्त्य तालाब के दाहिनी ओर आगे चलने पर खंडहरों के प्रतीक आज भी मिलते हैं। यहां पर अनेक चलचित्रों का फिल्मांकन भी हुआ है। गुफाओं के नीचे आने पर अगस्त्य तालाब के किनारे प्राचीन सूर्य मंदिर है। तालाब के एक कोने पर भगवान शिव को समर्पित द्रविड़ शैली में बना भूतनाथ मंदिर समूह है, जिसे 7वीं सदी में बादामी चालुक्यों द्वारा बनवाया गया था। यहां 12वीं सदी में कल्याणी चालुक्यों द्वारा मल्लिकार्जुन मंदिर समूह का निर्माण कराया गया था। भगवान विष्णु और शिव को समर्पित यह मंदिर भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इनके निर्माण की शिल्पकला में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। पास में ही एक भैरव मंदिर है, जिसकी चट्टान पर कई पौराणिक चित्र उकेरे गए हैं। यहीं से चार किमी की दूरी पर बादामी चालुक्यों की कुलदेवी बनशंकरी देवी का मंदिर है, जिसे मां पार्वती का अवतार माना जाता है। इसकी स्थापना अगस्त्य ऋषि ने की थी। मंदिर के पास में ही दर्शनार्थियों के ठहरने की व्यवस्था भी है। यहां गर्मी के मौसम को छोड़कर पूरे वर्ष में कभी भी जाया जा सकता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / अतुल मलिकराम

फील्ड कोई भी हो, बतौर टीम लीडर काम करने की ख्वाहिश प्रायः सभी को होती है। लेकिन टीम लीडर के रूप में सक्सेसफुल होने के लिए अपने काम में एक्सपर्ट होने के साथ ही आपके अंदर कुछ लीडरशिप क्वालिटीज का होना भी जरूरी है। क्या हैं वो क्वालिटीज, जानिए।

ये क्वालिटीज बनाएंगी सक्सेसफुल टीम लीडर

महात्मा गांधी की इस उक्ति 'आप खुद के भीतर वह बदलाव लाएं, जो आप लोगों में देखना चाहते हैं।' को अच्छे लीडरशिप के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। एक अच्छे लीडर में कुछ मूलभूत गुणों का होना आवश्यक है। आत्मविश्वास, संचार कौशल, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, ईमानदारी आदि गुणों की अपेक्षा एक टीम लीडर से की जाती है। एक अच्छा लीडर ऐसे निर्णय लेता है, जो उसकी टीम या संगठन के हित में हो।

पॉजिटिव एटिट्यूड: एक टीम लीडर के रूप में जरूरी है कि आप अपना एटिट्यूड हमेशा पॉजिटिव रखें। आप अपने टीम मेंबर्स को आगे बढ़ने में हमेशा मदद करें। आपके डिसिजंस ऐसे होने चाहिए, जिसे आपकी टीम बेझिझक स्वीकार करती हो। एक अच्छे टीम लीडर के रूप में आपको अपनी टीम की हर जरूरत की जानकारी होनी चाहिए। साथ ही टीम मेंबर्स के हार्ड वर्क और अचीवमेंट्स के लिए उन्हें रिवॉर्ड भी जरूर देना चाहिए। एक टीम लीडर के रूप में विश्वास रखें कि आपकी टीम मजबूत है, यहां हर कोई अपनी भूमिका अच्छे से निभाना जानता है और अपना टार्गेट अचीव करने की क्षमता रखता है।

बढ़ाएं टीम मेंबर्स का हौसला: एक अच्छे टीम लीडर को चाहिए कि वह अपने टीम मेंबर्स को, अपने कुलीग्स को हमेशा मोटिवेट करता रहे। आगे बढ़कर नेतृत्व करने का गुण या सार्थक नेतृत्व हमेशा ही लीडर की परछाई के समान साथ-साथ चलता है। एक लीडर के रूप में आपका पॉजिटिव बिहेवियर और लीडरशिप टीम मेंबर्स को अधिक गहराई से और पूरी तरह से बदलने की ताकत रखता है। यदि आप चाहते हैं कि आपकी टीम अधिक सकारात्मक हो, तो सबसे पहले आपको सकारात्मक रवैया अपनाना होगा। यदि आप चाहते हैं कि टीम मेंबर्स अपने काम को बिना किसी गलती के बेहतरी से पूरा करें, तो आपको उनके ऊपर विश्वास रखना होगा और उनके भीतर आत्मविश्वास जगाना होगा। उनकी कम्युनिकेशन स्किल्स और अपीयरेंस आदि पर विशेष तौर पर ध्यान दें और बेझिझक उन्हें सही सलाह देते रहें। साथ ही आपको चाहिए कि आप उनकी मदद करें और उनका हौसला बढ़ाते रहें।

स्वयं बनें उदाहरण: अगर आप चाहते हैं कि आपके टीम मेंबर्स समय से कार्यस्थल पर आएं और अपना हर काम समय पर पूरा करें, तो पहले आपको स्वयं समय से पहले या समय से वर्कप्लेस पर आने की आदत डालनी चाहिए। आप उन्हें वक्त की पाबंदी के फायदे बताएं। अपना और अपनी सफलता का उदाहरण देकर उन्हें समझाएं। याद रखिए, सफल नेतृत्व के तीन सबसे कारगर सिद्धांत हैं- उदाहरण, उदाहरण और उदाहरण। आप अपनी टीम के लिए कितना बड़ा और प्रभावी उदाहरण बन सकते हैं या पेश कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। लेकिन यकीन मानिए, आपके ऐसा करने का आपकी टीम पर बहुत पॉजिटिव इफेक्ट पड़ेगा। *

चिंता / के.पी. सिंह

विलुप्ति की कगार पर सोन चिरैया

सोन चिरैया यानी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, भारत के समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा रही है। यह पक्षी मुख्य रूप से राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात के कच्छ क्षेत्र में और कर्नाटक व आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में पाए जाते हैं। कभी बहुतायत में पाई जाने वाली सोन चिरैया धीरे-धीरे लुप्त होने की कगार पर है।

अनोखी शारीरिक संरचना: सोन चिरैया का वैज्ञानिक नाम 'अर्देवोटिस निग्रिसेप्स' है। इसे हिंदी में सोन चिरैया, मराठी में माढोक और राजस्थानी में गोडावण कहते हैं। सोन चिरैया लगभग एक मीटर ऊंची होती है, इनमें नर का वजन आमतौर पर 11 से 15 किलो होता है, जबकि मादा 4 से 7 किलो की ही होती है। इसके सिर के ऊपरी भाग में एक काली टोपी नुमा संरचना होती है। गर्दन स्पष्ट रूप से भूरे रंग की होती है। यह मानसून के दौरान प्रजनन करती है। नर सोन चिरैया में प्रजनन काल के दौरान गले पर पाउच जैसी संरचना उभर आती है। नर, मादा को बुलाने के लिए अपने पाउच से एक विशेष किस्म की आवाज निकालता है। सोन चिरैया सुबह और शाम के समय सक्रिय रहती है। दिन के समय यह प्रायः निष्क्रिय रहती है।

अत्यंत संकटग्रस्त: चिंताजनक बात यह है कि गीतों, कविताओं और लोककथाओं की शान रही भारत की यह खास चिड़िया लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई है। आईयूसीएन की रेड डाटा लिस्ट में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को अत्यंत संकटग्रस्त प्रजाति की श्रेणी में रखा गया है।

लुप्त होने के कारण: सोन चिरैया के लुप्त होने के अनेक कारण हैं। पहले इसका आवास घास के मैदानों और खेतों के बीच होता था, लेकिन अब घास के मैदान और खेत कम होने से इसके आवास की समस्या पैदा हो गई है। एक कारण यह भी है कि यह साल में केवल एक अंडा देती है और उसे भी जमीन पर देती है, जिसे आमतौर पर कुत्तों, लोमड़ियों या अन्य पशुओं द्वारा नष्ट कर दिया जाता है। अपनी कमजोर दृष्टि के कारण ये कांटों, बिजली के तारों आदि में फंसकर मरे जाते हैं।

संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयास: सोन चिरैया के संरक्षण के लिए आईयूसीएन, केंद्र एवं राज्यों द्वारा विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। मसलन, इसके शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। जैसलमेर के सुधासरी और रामदेवरा में इन्हें सुरक्षित आवासों में रखकर प्रजनन करवाया जाता है। इन सबके अलावा एनजीओ, वैज्ञानिक और स्थानीय समुदाय के लोग भी सोन चिरैया के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। *

लाइफस्टाइल / शिखर चंद जैन

बेहतर शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद बहुत जरूरी है। इसीलिए दुनिया भर में लोग अच्छी नींद के लिए तरह-तरह की तरकीबें अपनाते हैं।

अच्छी नींद के लिए अजब-गजब उपाय

कई शोध ऐसे हो चुके हैं, जिनमें अच्छी नींद को मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए बेहद जरूरी बताया गया है। अच्छी नींद के लिए चिकित्साविज्ञानी तरह-तरह के उपाय भी बताते रहे हैं, जैसे अंधेरे कमरे में सोना, ठंडे बेडरूम में सोना, बेड टाइम पर स्क्रीन से दूर रहना, रेग्युलर एक्सरसाइज करना आदि। लेकिन इन सब से हटकर दुनिया के विभिन्न देशों में लोग अच्छी नींद के लिए कुछ अलग तरह के उपायों को भी अपनाते हैं।

सोने से पहले पैर धोना: चीन में अच्छी, लंबी और गहरी नींद के लिए लोग गर्म पानी में पैर डुबोते हैं और एक्सफोलिएशन भी करते हैं। इससे हाइजीन के साथ-साथ ब्लड सर्कुलेशन भी दुरुस्त होता है और ब्लड वेसल्स भी ब्लॉक नहीं होती हैं। पैर गर्म रहने और बॉडी टेंपरेचर कम होने से नींद जल्दी आती है। यहां कुछ लोग फुट मसाज और स्पा ट्रीटमेंट लेते हैं। अरोमाथेरेपी लेते हैं और पैरों में गरम तौलिया भी लपेटते हैं। इससे उनकी दिन भर की थकान दूर हो जाती है और सुकून की नींद आती है।

कपल्स लेते हैं स्लीप डाइवोर्स: अमेरिका में अच्छी नींद के लिए कपल्स स्लीप डाइवोर्स का आइडिया अपनाते हैं। इसके तहत पार्टनर अलग-अलग बेड पर सोते हैं। कई कपल तो अलग-अलग रूम में भी सोते हैं ताकि नींद में खलल न पड़े।

पेट्स के साथ सोना: एक सर्वे के मुताबिक कनाडा के डॉग ऑनर्स में से कम से कम 75 फीसदी लोग अपने कुत्ते के साथ बेडरूम में सोना पसंद करते हैं, जबकि बिल्ली पालने वालों में से कम से कम 50 फीसदी लोग बिल्लियों को साथ लेकर सोते हैं। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूके में कम से कम 65 फीसदी लोग अपने पालतू के साथ सोते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि अपने पालतू पशुओं के साथ सोने से अच्छी और बेफिक्र नींद आती है। यूनिवर्सिटी आफ टोरंटो में इवोल्यूशनरी एंथ्रोपोलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर डेविड सैमसंग कहते हैं कि डॉग का साथ इंसान को सुरक्षा का एहसास देता है। यही वजह है कि अपने पेट डॉग के साथ लोग निश्चिंत और बेफिक्र होकर सोते हैं।

तकिए के नीचे डॉल रखकर सोना: ग्वाटेमाला में पुरानी परंपरा है कि लोग अपने तकिए के नीचे एक छोटी-सी डॉल रखकर सोते हैं, जिसका नाम है- वरी डॉल। मान्यता है कि वरी डॉल लोगों की चिंता या डर को दूर करती है। इससे उन्हें काफी कंफर्ट महसूस होता है। कई मनोवैज्ञानिकों और स्लीप एक्सपर्ट्स द्वारा किए गए अध्ययन में पता चला है कि इन वरी डॉल्स की उपस्थिति से लोगों का एंजायटी लेवल काफी कम हो जाता है, जिससे उन्हें अच्छी नींद आती है। *

हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में मैडी के नाम से पॉपुलर एक्टर आर. माधवन की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' 11 जुलाई को रिलीज हो रही है। इस अलग-सी रोमांटिक फिल्म को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इसके लिए उन्हें कैसी तैयारियां करनी पड़ीं? इस फिल्म, करियर और पर्सनल लाइफ से जुड़ी बातें आर. माधवन से।

मनोरंजन का कामयाब जरिया बन गया है ओटीटी: आर. माधवन

मुलाकात / पूजा सामंत

आर. माधवन हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में समान रूप से एक्टिव हैं। वे एक अच्छे एक्टर होने के साथ-साथ सहज, मिलनसार और डाउन टु अर्थ इंसान भी हैं। वर्ष 2001 में रिलीज 'रहना है तेरे दिल में' बतौर लीड एक्टर माधवन की पहली हिंदी फिल्म थी। हमेशा चुनिंदा फिल्मों में नजर आने वाले माधवन, नेटफ्लिक्स की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' में फातिमा सना शेख के साथ नजर आएंगे। इस फिल्म को निर्देशित किया है विवेक सोनी ने। पेश है आर. माधवन से इस फिल्म और करियर पर हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आपकी फिल्म 'आप जैसा कोई' रिलीज हो रही है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताइए। इस रोमांटिक फिल्म को करने के पीछे क्या वजह रही?

लेखक-निर्देशक विवेक सोनी ने जब मुझे फिल्म की कहानी सुनाई तो मुझे इस प्रेम कहानी का अनोखापन बहुत पसंद आया। प्रेम के रिश्ते में लड़का-लड़की दोनों एक ही लेवल पर होते हैं। न लड़का खुद को ग्रेट समझे, न लड़की। यह इक्कीसवीं सदी की प्रेम कहानी है। बिल्कुल इस दौर की कहानी। प्रेम के रिश्ते में लड़की अगर प्यार की पहल करे तो क्या बुराई है? फिल्म का हीरो यानी मैं संस्कृत सिखाने वाला प्रोफेसर हूं। मेरी शादी 40 की उम्र तक नहीं होती है। मेट्रीमोनियल वेबसाइट पर मेरी मुलाकात एक युवती (फातिमा सना शेख) से होती है, जो काफी मॉडर्न खयालात की है। उसे मेरे घर के लोग मना कर देते हैं। फिर क्या होता है? क्या हमारा रिश्ता आगे बढ़ता है? इसके इर्द-गिर्द फिल्म की कहानी घूमती है। मुझे यह प्लॉट, मेरा किरदार (श्रीरेणु) सब बहुत पसंद आया।

श्रीरेणु का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारियां करनी पड़ीं?

मेरी रियल एज 55 साल है। लेकिन फिल्म में मेरा किरदार श्रीरेणु 40 के आस-पास का है। मुझे अपनी उम्र से 15 वर्ष कम का दिखना था। इसके लिए मैंने जिम जाकर काफी वर्कआउट किया। स्क्रीन पर उम्र कम दिखे इसलिए मुझे अपनी दाढ़ी हटानी पड़ी, क्लीन शेव रखनी पड़ी। हालांकि मैं अपना दाढ़ी वाला लुक बदलना नहीं चाहता था। मेरे लिए यह बड़ा बदलाव था। फिल्म में मेरे कैरेक्टर की साइकोलॉजी को समझना था। कुल मिलाकर मुझे इस कैरेक्टर के लिए खुद को तैयार करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

'आप जैसा कोई' के एक दृश्य में आर. माधवन और फातिमा सना शेख

इस फिल्म में अधेड़ उम्र के पुरुष का प्यार दिखाया गया है। आपकी नजर में क्या समाज ऐसे प्यार को स्वीकार करता है?

समाज का क्या है, वो तो हर कंडीशन में कुछ न कुछ कहता ही रहता है। दंपति में उम्र का फासला ज्यादा हो तो दिक्कत, उम्र एक सी हो दोनों की तो भी कहने वाले कहते रहेंगे, पति-पत्नी की हाइट में बहुत फर्क हो तो भी कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना। लेकिन मेरा मानना है कि अब सामाजिक परिवर्तन हो रहा है, स्वीकार्यता बढ़ रही है।

सुना है, 'आप जैसा कोई' फिल्म की शूटिंग के दौरान आप जमशेदपुर स्थित अपने पुश्तैनी घर भी गए थे, कैसा रहा वहां जाने का अनुभव?

जमशेदपुर में मेरा जन्म हुआ था। कई वर्षों तक मेरा वहां जाना नहीं हुआ। जब इस फिल्म की शूटिंग उस इलाके (हुगली) में हो रही थी तो मैं टाइम निकालकर अपने पुश्तैनी घर जमशेदपुर गया। बचपन में जो घर मुझे बहुत बड़ा लगता था, इस बार छोटा नजर आया। जो लोग मेरे पड़ोस में थे, अब उनमें से शायद ही कोई वहां था। मैंने वहां आइसक्रीम, स्वीट्स को एंज्वॉय किया। अपने पुराने घर की ढेर सारी यादों को साथ लेकर मैं वापस आया।

आपने टीवी से डेब्यू किया था। फिर आपने साउथ, हिंदी, अंग्रेजी फिल्मों में काम किया। और अब 'आप जैसा कोई' फिल्म से आप ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एंट्री कर रहे हैं। इस बारे में क्या कहना चाहेंगे आप?

सभी जानते हैं, ओटीटी आज के दौर में मनोरंजन का बेहद कामयाब जरिया है। यहां फिल्में भी आती हैं, डॉक्यूमेंटरी सीरीज और वेब सीरीज भी। अब कलाकारों के लिए यह मायने नहीं रखता कि वे किस प्लेटफॉर्म के लिए काम करते हैं। अच्छे मौके आए तो बॉलीवुड क्या, हॉलीवुड क्या, ओटीटी क्या और टीवी क्या? किस माध्यम के लिए मैं कंटेंट बना रहा हूं यह मेकर को अहसास हो, तो वो उस माध्यम का लाभ उठाकर उम्दा कंटेंट दे सकता है। बहरहाल, मैं इस वर्ष बड़े परदे यानी सिनेमा के लिए भी काम कर रहा हूं। 'दे दे प्यार दे 2' और 'धुरंधर' मेरी दो फिल्में इसी वर्ष रिलीज होंगी। *

मैं ये सब नहीं कर सकता

आर. माधवन इतनी अच्छी एक्टिंग कर लेते हैं लेकिन क्या कुछ ऐसे काम भी हैं, जो वह नहीं कर सकते? पूछने पर वह बताते हैं, 'मैं फूडी हूं इसलिए डाइटिंग नहीं कर सकता। मुझे आंकड़ों से नफरत है। मैं अपने फाइनेंसियल मैटर्स को मैनेज नहीं कर सकता, मेरी पत्नी सरिता यह काम संभालती हैं। सरिता ने मुझे क्रेडिट कार्ड दे रखा है। मैं अपने जरूरी खर्चे क्रेडिट कार्ड से चला लेता हूं। कैश खोने का डर रहता है। मेरे जितने भी बैंक अकाउंट्स हैं, वो सरिता के नाम पर हैं। मेरी हमसफर के अलावा वो मेरी कैशियर, बैंक मैनेजर भी है।'